मूल्य: 20/–

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

वर्ष-1, अंक:-06 संयुक्तांक (सितम्बर-अक्टूबर, 2024)

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

RNI No.: BIHHIN/2023/86004

इंपा पहुंचे बिहार के पर्यटन मंत्री नीतीश मिश्रा ने फिल्मकारों को किया आमंत्रित

बोलो जिंदगी के सभी प्रिय पाठकों को

नवरात्रि एवं दीपावली की

हार्दिक शुभकामनाएं

कोमल है कमजोर नहीं तू,
शक्ति का नाम ही नारी है।

सबको जीवन देनेवाली,
मौत भी तुझसे हारी है।

मां दुर्गा के 9 गुणों को अपनाकर ही नारी शक्ति स्वयं को सशक्त बना सकती है। मां दुर्गा धैर्य, सहनशीलता, भक्ति, शक्ति, तपस्या, साहस, धर्म, पवित्रता और सिद्धि की देवी हैं।

नवरात्रि के पावन दिनों में आपको शक्ति, प्रेम और सफलता की शुभकामनाएं। जय माता दी! नवरात्रि आपके लिए समृद्धि, शांति और आनंद लेकर आए और माँ दुर्गा सदैव आपके साथ रहें।

PRITAM KUMAR
Managing Editor

बोलो जिंदगी

पत्रिका में विज्ञापन के लिए हमसे संपर्क करें।

Mob.: 7903935006 / 9122113522

E-mail : bolozindagi@gmail.com

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

वर्ष-1, अंक:-06 संयुक्तांक (सितम्बर-अक्टूबर, 2024)

संपादक : **राकेश कुमार सिंह**
सहायक संपादक : **अमलेंदु कुमार**
प्रबंध संपादक : **प्रीतम कुमार**
सलाहकार संपादक : **मनोज भावुक**
कंप्यूटर ग्राफिक्स : **संजय कुमार**
कानूनी सलाहकार : **अमित कुमार**
प्रचार–प्रसार : **अनिल कुमार**
राकेश कुमार 'छोटू'
(ब्यूरो प्रमुख)
मुंबई : **अमृत सिन्हा**
नई दिल्ली एवं कोलकाता : **उज्ज्वल कुमार झा**

BIHHIN/2023/86004

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार सिंह द्वारा अन्नपूर्णा ग्राफिक्स, C/O जय दुर्गा प्रेस, बिहाइंड गुलाब पैलेस, आर्य कुमार रोड, पटना, बिहार–800004 से मुद्रित एवं 3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001 से प्रकाशित ।
संपादक : **राकेश कुमार सिंह**

संपादकीय कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. – 7903935006/7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com

रजि. कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. : 7903935006 / 7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmoil.com
वेबसाइट : www.bolozindagi.com

सभी पद अवैतनिक

सभी विवादों का निपटारा पटना की सीमा में आनेवाली सक्षम अदालतों में किया जाएगा।

इंपा पहुंचे बिहार के पर्यटन मंत्री नीतीश मिश्रा ने फिल्मकारों को किया आमंत्रित

05

1.	शादी बाद पत्नी को तौफे में विनोबा भावे जी की पत्रिका....	3
2.	पहली ही फिल्म में इंटिमेट सीन करते वक्त मेरी हालत...	6
3.	शुरू के 6 महीना बाद ही मैं बिना बताये सेट छोड़कर घर भाग गया था : चेतन शर्मा, उड़ान फेम डायरेक्टर	8
4.	राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका बोलो जिंदगी का लोकार्पण	11
5.	गुरु जी से शादी हुई थी इसलिए उनसे थोड़ा डर भी लगता था	12
6.	भोजपुरी सिनेमा के पितामह हैं नाजिर हुसैन	14
7.	गांधी जी के सपनों का आश्रम : भीतिहरवा	17
8.	समाज सुधारक थें डॉ. राम मनोहर लोहिया	20
9.	अमेरिका में सबसे ऊंची हनुमान प्रतिमा का अनावरण	21
10.	फिल्मी सितारों की यादगार दिवाली	22
11.	भारतीय छात्र यूरोप में आईटी, फार्मा और फैशन पाठ्क्रम क्यों चुन रहे हैं?	23
12.	दोस्त और किताबें (लघु कथा)	25
13.	कुछ चुप्पियां..बेहद गहरी होती हैं (कविता)	25
14.	हिम्मत की सहेली आशा	26
15.	धैर्य और पराक्रम का स्वामी मंगल	27
16.	व्रत के लिए टिक्की दही चाट	28
17.	प्रॉपराइटरशिप फर्म बनाकर आप भी शुरू कर सकते हैं अपना बिजनेस	29
18.	सांसद अरुण गोविल ने मनोरंजन उद्योग से जुड़े कलाकारों और कामगारों की समस्याओं को लोकसभा में उठाने का दिया भरोसा	30
19.	आयुषमति गीता मैट्रिक पास का ट्रेलर अब रिलीज : दृढ़ संकल्प की एक प्रेरक कहानी	31
20.	एक देश एक चुनाव–मंत्रिमंडल की मिली स्वीकृति	32

गांधी कोई भी बन सकता है

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में किसी को एक पल की भी यह फुर्सत नहीं है कि वह दूसरों के बारे में सोचे, दूसरों के काम आए। लेकिन वहीं जब पड़ोसियों पर कोई विपदा टूट पड़े तो उसके घर की खिड़की खुल जाएगी और उसकी निगाहें पड़ोसी के घर के अंदर तक जाकर उसकी कमियों एवं लाचारी को बेध उसपर ठहाके लगाएंगी। आज न सिर्फ युवा बल्कि कई प्रौढ़ आयु वाले भी जरा सा क्रोधित होने पर अपशब्द बोलने से पीछे नहीं हटेंगे। आज के युवाओं को जहां कहीं शक्ति प्रदर्शन का मौका मिलता है वह उसमें बिना भाग लिए नहीं रहना चाहते क्योंकि अधिकांश का मत होता है कि मैं गांधी नहीं हूं जो मार खाकर चुपचाप रह जाऊं या फिर एक गाल में चांटा खाने पर दूसरा गाल भी आगे बढ़ा दूं? यह सही भी है कि जो प्रयोग कभी गांधी ने किया था वह आज के हालात में सक्षम नहीं हो सकता पर इस वजह से गांधी जी गाली के पात्र क्यों बन गए? गांधी जी ने तो कभी ये नहीं कहा कि आप लल्लू बने रहें बल्कि उन्होंने तो अपने हक के लिए लड़ने एवं विपक्षी के आगे सिर नहीं झुकाने की बात कही है। फिर वह आप पर निर्भर करता है कि आप समस्या को किस विधि से सुलझाना चाहते हैं, नरमी दिखाकर अथवा गर्मी दिखाकर।

बहुत से युवा किसी भी अनजान शख्स को फोन पर उसकी मां बहनों के लिए अपशब्दों का प्रयोग कर अपने दिल की भड़ास निकालते हैं मगर आश्चर्य कि जब इधर से भी वैसे ही वाक्य दोहराए जाते हैं तो वे एकदम बौखला जाते हैं। जिस तरह झगड़े से झगड़ा नहीं सुलझ सकता ठीक उसी तरह गोलियों और गालियों की भाषा से भी कभी अमन चैन की फसल नहीं लहलहा सकती, बल्कि उसके लिए जरूरी है प्रेम और भाईचारे की फुहार।

जीवन की इस साफ सुथरी विचारधारा को अपनाना सिर्फ गांधीवाद नहीं है बल्कि जीवन सलीके से जीने का सर्वोच्च तरीका भी है। समय समय पर जो गांधी जी की प्रतिमा तोड़ी जाती है उससे गांधी जी के मान सम्मान पर कोई आंच तो नहीं आएगी पर ऐसा करनेवाले एक दिन अपना ही वजूद खो बैठेंगे इसकी शत प्रतिशत गुंजाइश है। सिर्फ अहिंसा शब्द का तात्पर्य समझ लेने से कुछ हासिल नहीं होगा। गांधी कोई भी बन सकता है बशर्ते कि वह दूसरों को जो उपदेश दे उसे पहले खुद भी अमल में लाए। क्या यह हमसे संभव है !

राकेश कुमार सिंह
संपादक

शादी बाद पत्नी को तौफे में विनोबा भावे जी की पत्रिका दी थी तब वह चौंक पड़ी थीं : (स्व.) डॉ. जगन्नाथ मिश्रा, पूर्व मुख्यमंत्री, बिहार

मेरा जन्म बिहार के सुपौल (तब के सहरसा) जिले के 'बलुआ बाजार' गांव में हुआ था। गांव में ही हाई स्कूल तक की पढ़ाई हुई। टी.एन.जी. कॉलेज, भागलपुर से ग्रेजुएशन फिर एम.ए. किये बिहार यूनिवर्सिटी, मुजफ्फरपुर से और वहीं से पी.एच.डी. भी कियें। 1960 में वहीं पर लेक्चरर नियुक्त हो गए। उस जमाने में मार्क्स के आधार पर बहाली होती थी, हम सेकेण्ड आये थें यूनिवर्सिटी में। स्कूल में मैंने विधार्थियों की एक मण्डली बना रखी थी। उनकी मदद से हम हर रविवार को सफाई का काम करते थें। रात में प्रौढ़ शिक्षा का काम करते थें। हमारा उद्देश्य था गांव को साफ–सुथरा रखना और गांव के अनपढ़ बूढ़े–बुजुर्गों को सरकार के प्रौढ़ शिक्षा अभियान के तहत 10–12 टोलों में साथियों के सहयोग से लालटेन जलाकर पढ़ाने का काम होता था। यह मैट्रिक तक चला। फिर हम भागलपुर पढ़ने चले गए। लेकिन मैट्रिक देने के तुरंत बाद हम सीधे चले गए चांडिल, सिंहभूम जिले में। वहां विनोबा जी का सम्मलेन हो रहा था सर्व सेवा संघ का। उनके माध्यम से हम जयप्रकाश जी के सम्पर्क में आ गएँ। जयप्रकाश जी ने विद्यार्थी के हैसियत से मुझसे कहा– "जो तुम कल कॉलेज जा रहे हो तो विधार्थियों के बीच सर्वोदय अभियान को चलाओ। तुम अगर संगठन कर सकोगे तो हम भी तुम्हारे पास आएंगे।" वहीं जो मुझे जयप्रकाश जी का यह मैसेज मिला तो उत्साहित होकर कॉलेज जाकर मैंने सर्वोदय विद्यार्थी परिषद बनवाया। उसके वार्षिक सम्मलेन में तीन बार हमारे

निमंत्रण पर जयप्रकाश जी आये थें। उन दिनों विनोबा जी बिहार भ्रमण पर थें। तब हर गर्मी छुट्टी में और पूजा छुट्टी में विनोबा जी जहाँ भी होते थें मैं चला जाता था। हम उनके भूदान यात्रा में शामिल होते थें, उन्ही का प्रवचन सुनते थें और उन्ही की किताब पढ़ते थें।

हमारे परिवार के लोग पॉलिटिक्स में थें। हमारे परिवार के 11 व्यक्ति स्वतन्त्रता सेनानी भी रहे हैं। मेरी शादी स्व. वीणा मिश्रा के साथ 1959 में हुई थी। मेरा ससुराल समस्तीपुर जिले में हुआ। हमारे ससुर जी भी बेगूसराय में संस्कृत के प्रोफेसर थें। मेरा शौक शुरू से ही लिखने–पढ़ने का रहा है। अभी तक 20 किताबें लिख चुका हूँ। अधिकांश किताबें अर्थशास्त्र से सम्बंधित हैं। मुझपर विनोबा भावे जी के भूदान आंदोलन का बहुत असर पड़ा। गाँधी थॉट के साथ हम उनके आंदोलन से जुड़ गए। उनके माध्यम से मैं जयप्रकाश नारायण जी के सम्पर्क में आया। मेरा देश के पॉलिटिक्स में आना ऐसे हुआ कि यूनिवर्सिटी की पॉलिटिक्स में हम इंट्रेस्टेड हो गएँ। सबसे पहले हम सीनेटर बनें, सिंडिकेट बनें और काफी दिनों तक यूनिवर्सिटी में रहें। इससे हमारी पहचान बढ़ गयी। 1968 में यूनिवर्सिटी का चुनाव हो रहा था। उस समय हमारे साथियों ने जो हमारे कामों के अंतर्गत सिंडिकेट की हैसियत से टीचर की समस्याओं को उठाया था तो उनलोगों का जोर था कि मैं कैंडिडेट बनूँ। लेकिन मैं मुजफ्फरपुर में कैसे लड़ूँ, मैं सहरसा का ठहरा। लेकिन तब सभी जात के लोगों ने कॉलेज में हमारा समर्थन किया तो हम खड़ा हो गए। तब मेरे बड़े भाई साहब स्व. ललित नारायण मिश्रा ने मुझे टोका कि "तुम कहाँ सहरसा के ठहरे, ब्राह्मण हो, मैथिली भाषी हो फिर कैसे तुम करोगे..?" लेकिन हमने बैक नहीं किया और फिर 1968 में जीत भी गए । 1952 में मेरे बड़े भाई स्व. ललित मिश्रा जी भी स्वतंत्रता सेनानी के रूप में जब जेल में थें तब उन्हें 5 साल की सजा हुई थी। तो उन्हें छुड़ाने के लिए हमारी माता जी बहुत व्याकुल थीं। उनको किसी ने बताया कि अगर ललित जो माफीनामा मांगेंगे तब उन्हें छोड़ दिया जायेगा। लेकिन हमारे पिताजी ने कहा कि "नहीं,ये नहीं हो सकता है, हमको तो खुशी होती कि और लोगों की तरह हमारा बेटा भी शहीद हो जाता।" वे 5 साल तक जेल में रहकर छूटें तो फिर टी.एन. बी. कॉलेज में लेक्चरर की बहाली में उनकी नौकरी लग गयी। पिता जी ने उनसे कहा कि "तुम्हें हम जेल से

बोलो जिंदगी के साथ संस्मरण साझा करते हुए (स्व.) डॉ. जगन्नाथ मिश्रा, पूर्व मुख्यमंत्री, बिहार

इसलिए नहीं छुड़ाए कि तुम देश के काम आओ। देश के लिए काम करो ये नौकरी–चाकरी नहीं।" इसलिए उन्होंने फिर नौकरी छोड़ दी। पिता जी की मंशा थी कि हमारे परिवार का कोई सदस्य ऐसा हो जो कोशी नदी को बांधे। कोशी नदी से बाढ़ की बहुत पीड़ा थी। वहां रेल लाइन तो आ गयी थी लेकिन बाढ़ की वजह से सब बर्बाद हो गया था। हमारे पिताजी कहते थें कि "कोई सपूत हो हमारे परिवार का जो रेलगाड़ी ला दे और कोशी को बांधकर बाढ़ की विभीषिका से हमें बचाये। संयोग से स्व. ललित बाबू लोकसभा में चले गए। उस समय उन्होंने संघर्ष करके कुछ योजनाएं बनवाईं। रेल को बलुआ बाजार गांव तक पहुंचवाया और कोशी पर बांध भी बनवा दिया। जिसे हमने अपने कार्यकाल में ललित नारायण तटबंध के नाम से घोषित कर दिया।

मैट्रिक में थे तब फुटबॉल खेलते थें। तब क्रिकेट या कोई और खेल में दिलचस्पी नहीं थी। तब हमें फिल्मों का शौक भी नहीं था। लेकिन एक बार एक सिनेमा हमने देखी 'सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र' ब्लैक एन्ड वाइट में। फिर जब भाई साहब दिल्ली में रहते थें तो वहां हमने देखा 'नया दौर' दिलीप कुमार और वैजन्ती माला अभिनीत। उसके बाद हमने कोई सिनेमा नहीं देखा क्यूंकि रूचि नहीं थी।

मेरी शादी 1959 में हुई। जब एम.ए. में थें और इम्तहान होनेवाला था उसी समय हमारी शादी हो गयी। हालांकि उस समय हम नहीं करना चाहते थें लेकिन हमारे बड़े भाई स्व. ललित बाबू ने हमारे ससुर जी को कमिटमेंट दे दिया था। चूँकि इम्तहान का साल था तो हम शादी क्यों करतें, बाद में करतें। लेकिन घरवालों की जिद्द की वजह से कर लिए। शादी में पत्नी को जो पति की तरफ से तौफा दिया जाता है उसमे हमने उनको भूदान आंदोलन पर विनोबा जी की एक साप्ताहिक पत्रिका दी थी। वे चौंक गयीं और मन–ही–मन सोचने लगीं कि क्या लड़का है, क्या तौफा लाया है! शादी हो गयी तो भी हम पत्नी से दूर 6–7 महीना मुजफ्फरपुर में ही पढ़ते रहें। जब इम्तहान खत्म हुआ तब फिर ससुराल गएँ जो कि पटना में ही था। ससुरालवालों का उस जमाने में एक नामी प्रेस था 'अजंता प्रेस' जहाँ से पत्रिकाएं निकलती थीं और वहां बड़े साहित्यकारों का जमघट लगा रहता था। हमारे ससुरालवाले साहित्यिक रुझानवाले थें। उनका एक साहित्यिक मंच भी था। लेकिन इसके बावजूद भी मुझे साहित्य की तरफ कभी आकर्षण नहीं हुआ। जब मैं कॉलेज में लेक्चरर हुआ तभी मेरी पहली किताब 'सार्वजनिक वित्त' के नाम से आयी थी।

प्रस्तुति : राकेश सिंह 'सोनू'

इंपा पहुंचे बिहार के पर्यटन मंत्री नीतीश मिश्रा ने फिल्मकारों को किया आमंत्रित

हिन्दी फिल्मों के निर्माताओं को 25 प्रतिशत तक और क्षेत्रीय भाषा की फिल्मों को 50 प्रतिशत तक सब्सिडी की घोषणा

मुंबई ब्यूरो, बिहार सरकार में पर्यटन विभाग के नवनियुक्त मंत्री नीतीश मिश्रा अपने मुंबई यात्रा के दौरान इंडियन मोशन पिक्चर प्रोड्युसर्स असोसिएशन (इंपा) के आमंत्रण पर फिल्म निर्माताओं से मिलने अंधेरी (पश्चिम) स्थित इंपा हाउस पहुंचे। यहां उनका स्वागत इंपा के प्रेसिडेंट अभय सिन्हा और अन्य पदाधिकारियों ने किया। इंपा सदस्यों से बात करते हुए नीतीश मिश्रा ने कहा कि बिहार अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं, विरासतों तथा सभी धर्मों के पवित्र स्थलों का केंद्र रहा है। धार्मिक समन्वय के लिए बिहार भारत ही नहीं बल्कि दुनिया भर में प्रसिद्ध है। हम यहां पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सिनेमाई निर्माताओं को भी आमंत्रित कर रहे हैं जहां का आतिथ्य सत्कार बेहद प्रसिद्ध है, हम उस भाव को पर्यटन विभाग के कार्यक्रमों, योजनाओं और नीतियों में लाएंगे। बिहार फाउंडेशन के आमंत्रण पर मुंबई पहुंचे श्री मिश्र ने इंपा के सदस्यों से कहा कि पर्यटन संपदाओं से समृद्ध इस प्रदेश में पर्यटन उद्योग और शूटिंग की असीम संभावनाएं है। पर्यटन को रोजगारोन्मुख बनाने के लिए पर्यटन स्थलों को विकसित कर बुनियादी सुख–सुविधाओं का समुचित प्रबंधन करने का कार्य राज्य सरकार की प्राथमिकता है। पर्यटन मंत्री नीतीश मिश्रा ने कहा कि बिहार में शूटिंग करने वाले हिन्दी फिल्मों के निर्माताओं को 25 प्रतिशत तक और क्षेत्रीय भाषा की फिल्मों को 50 प्रतिशत तक सब्सिडी दी जाएगी। इसके लिए 15 दिनों में हम एक पूर्ण निति की घोषणा करेंगे। इस अवसर पर इंपा के प्रेसिडेंट अभय सिन्हा, सिनीयर वाईस प्रेसिडेंट सुषमा शिरोमणि, वाईस प्रेसिडेंट सुरेन्द्र वर्मा उर्फ टीनू वर्मा,ट्रेजरार बाबू भाई थीबा,जनरल सेक्रेटरी कुक्कू कोहली,जनरल सेक्रेटरी (एफएमसी) निशांत उज्जवल,फिल्म निर्माता अशोक पंडित, संजीव सिंह (बॉबी), सेक्रेटरी अनिल नागरथ आदि ने बिहार सरकार के पर्यटन विभाग के नवनियुक्त मंत्री नीतीश मिश्रा का स्वागत किया। इस अवसर पर इंपा के प्रेसिडेंट अभय सिन्हा ने फिल्मकारों को बिहार में सुविधाएं देने पर पर्यटन मंत्री नीतीश मिश्रा और बिहार सरकार का आभार जताया। ❒

पहली ही फिल्म में इंटिमेट सीन करते वक्त मेरी हालत खराब हो गयी थी : विनीत कुमार, अभिनेता

मेरी पहली फिल्म थी 'द्रोहकाल' जिसके डायरेक्टर थें गोविन्द निहलानी। फिल्म 1994 में रिलीज हुई थी और शूटिंग 1993 में हुई थी। मैं तब कैमरामैन राजन कोठरी का असिस्टेंट था। वो एक फिल्म डायरेक्ट कर रहे थें। वे मुझे छोटे भाई की तरह मानते थें। सबसे पहले मेरे पास आशीष विद्यार्थी आएं। उन्होंने कहा– "अरे गोविन्द जी तुमको खोज रहे हैं।" तो मेरे साथ ऐसा था कि जबसे मैं मुंबई गया हूँ तबसे मेरी जो एक किस्म की दबंगई है वो हमेशा से रही है। मैंने कहा– "हाँ तो खोज रहे होंगे।" और मन में ये भी चल रहा था कि इतना बड़ा डायरेक्टर हमको क्यों खोजेगा। फिर उसके बाद अतुल तिवारी आएं। उन्होंने भी कहा "अरे गोविन्द निहलानी तुमको खोज रहे हैं।" हम बोले– "अच्छा"। उसके बाद दुबारा फिर आशीष विद्यार्थी आएं। उन्होंने गंभीर स्वर में कहा– "गोविन्द जी खोज रहे हैं, भाई तुम जाते क्यों नहीं, मिलते क्यों नहीं हो। चलो हम लेकर चलते हैं।" तब हमने कहा– "अच्छा हम जाते हैं।"

मैं उनके ऑफिस परेल पहुंचा। तब वे बॉम्बे सेंट्रल बैठे हुए थें, मुझे वहीं आने को कहा। मैं गया वहां। उन्होंने गौर से देखते हुए पूछा– "तुम हो विनीत ?" मैंने कहा– "जी मैं ही हूँ विनीत।" उन्होंने कहा– "ऐसा तो नहीं देखा था तुमको।" तब एक सीरियल आता था पंकज पराशर का 'अब आएगा मजा'। उसमे मुझे किसी और गेटअप में उन्होंने देखा था। मैंने कहा– "मैं स्क्रीन पर बदल जाता हूँ, ये मेरी प्रॉब्लम है।" फिर उसके बाद बातें हुईं तो उन्होंने पूछा– "तस्वीर है?" मेरे पास तब छोटा सा एक एलबम था, मैंने वो उन्हें दे दिया। देखते–देखते उन्होंने 8–9 तस्वीरें निकाल लीं। मैं चूँकि असिस्टेंट भी था तो उस गेटअप वाली तस्वीर भी निकाल लिए थें। मैंने कहा– "ये सब आप लेंगे?" वे मुझे देखकर मुस्कुराएं और बोले– "क्यों, एक तस्वीर दो रूपये 80 पैसे की तो बनती है।" फिर उन्होंने तीन तस्वीर निकाली, बाकि दे दिया। मैं चला आया। उन्होंने और कुछ नहीं कहा।

उसके बाद मैं सतारा राजन भाई के साथ शूटिंग पर चला गया। वहीं राजन भाई ने कहा– "अरे गोविन्द जी का फोन आया था, तुम्हारा स्क्रीन टेस्ट लेना चाहते हैं।" मैंने कहा– "मैं स्क्रीन टेस्ट नहीं देता हूँ, मुझे नहीं देना है।" तब गोविन्द जी का फोन आया कि "नहीं, स्क्रीन टेस्ट नहीं लेना है। स्क्रीन पर तुम नजर कैसे आते हो ये देखना है।" मैंने कहा– "जब मुंबई आऊंगा तब आपके पास आ जाऊंगा।" फिर उनका फोन आया कि इस दिन आ जाओ तो मैं पहुंचा उनके पास। एक छोटा–सा कैमरा लगा हुआ था। वे मेरे सामने बैठे और पूरा एक सीन बताया ऐसा–ऐसा है। बताने के बाद उन्होंने कहा कि "जब तुम रेडी हो जाओगे तो बताना।" मैंने कहा– "मैं तो रेडी हूँ।" उन्होंने चौंककर कहा– "अच्छा. .!" फिर जब उन्होंने कैमरा एक्शन कहा मैंने पूरा सीन कर दिया। फिर दूसरा बताया, तीसरा बताया सब कर दिया और उसके बाद मैं चला आया।

आने के कुछ दिनों बाद गोविन्द जी का फोन आया कि तुम फिल्म 'द्रोहकाल' कर रहे हो।" जब मैं फिल्म की शूटिंग पर पहुंचा तो गोविन्द जी को ना जाने क्यों मेरे ऊपर इतना विश्वास हो गया कि वो एक साथ सीन शुरू होने पर एक–दो टेक नहीं लेते थें बल्कि 5–7

तक ले लेते थें। पहले दिन की ही बात है, उन्होंने पहला टेक लिया, दूसरा लियाŽपांचवां– छठा फिर कहा– "और करोगे क्या..?" हमको लगा यार ये तो परीक्षा हो गयी, अब मैं नया क्या करूँगा। मैंने कहा– "अच्छा चलिए।" फिर ट्राई किया। 7 वें टेक में उन्होंने बोला– "बस हो गया।" मेरे और उनके संबंध जो एक्टर और डायरेक्टर के थें वो बड़े अद्भुत थें। वे जब सामने खड़े होते थें मुझे ऐसा लगता था कि मुझे समझ में आ गया है मुझे क्या करना है। और सम्भवतः वह उन गिनी–चुनी फिल्मों में से एक ऐसी फिल्म थी जिसे करने में बड़ा आनंद आया। शायद इसलिए कि वह पहली फिल्म थी या इसलिए कि डायरेक्टर को मेरे ऊपर विश्वास था। मेरे कैरेक्टर का नाम था किशन धानु जिसने रॉकेट लॉन्चर से होम मिनिस्टर को फिल्म में उड़ाया है।

मैं बिहार का हूँ और वहां जीवन में प्यार–व्यार जैसा कुछ था नहीं। कोई स्त्री से संबंध था ही नहीं। तो फिल्म में मेरी पत्नी बनी किट्टू गिडवानी के साथ एक बेड सीन करना था। मेरी हालत खराब। मैंने कहा– "मैं इसमें क्या करूँगा। मैं तो ये जानता ही नहीं हूँ कैसे होगा..?" किट्टू हंसने लगी और बोली– "मैं जो करूँ वही तुम भी करना।" फिर कुछ इंटिमेट सीन हुए। मेरी कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था। क्यूंकि ये काम मैंने कभी किया ही नहीं था तो क्या समझ में आता। मेरे लिए यही सीन इतना टफ हो गया कि लोग सेट पर हँसते थें कि "कमाल का एक्टर है यार, लोग ऐसे सीन के लिए तरसते हैं कि भाई अंतरंग सीन मिले और एक ये हैं कि इतना मजेदार सीन करने में इनकी हालत खराब हो रही है।" इसमें किट्टू ने बहुत मदद किया। वह सीन तो अच्छा बन गया लेकिन फिर एडिटिंग टेबल पर

बोलो जिंदगी के साथ संस्मरण साझा करते हुए विनीत कुमार (बायें)

डायरेक्टर को लगा कि इस सीन की जरुरत नहीं है तो बाद में वह फिल्म से हटा दिया गया।

एक मेरा टॉर्चर सीन था। श्याम बेनेगल की बिटिया पिया बेनेगल वहां कॉस्ट्यूम देख रही थीं। मैं मेकअप रूम में बैठा हुआ था और अचानक पिया आयीं और बोलीं कि "ऐसा कैसे हो सकता है विनीत..?" हमने कहा– "क्यों क्या हुआ?" वे बोलीं– "तुम न्यूड कैसे कर सकते हो?" हमने कहा– "न्यूड क्या करना है।" वे बोलीं "वो टॉर्चर सीन न्यूड है।" हमने कहा– " वो डायरेक्टर का सोचना है ना, मैं न्यूड होकर सीन कर दूंगा मेरा क्या.. ?" वे बोलीं– "नहीं तुम ऐसा नहीं कर सकते हो।" मैंने कहा– "आपका विषय है, आप कॉस्ट्यूम कर रही हैं तो देख लीजिये।" तब अंत में वो जाकर गोविन्द जी से लड़ीं और बोलीं कि "ये लंगोट पहनेगा।" फिर वो टॉर्चर सीन लंगोट में हुआ। ऐसी ढ़ेर सारी घटनाएं हैं, चूँकि मैं थियेटर का आदमी हूँ तो मुझे वो सारी समस्याएं होती ही नहीं थीं कि मुझे पहनना क्या है, ये मेरे लिए इश्यू नहीं था। इश्यू ये था कि मुझे करना क्या है और कैसे करना है। इसलिए मुझे कभी कोई दिक्कत नहीं हुई और लोगों ने कहा भी कि पहली फिल्म थी फिर भी बहुत अच्छा किया मैंने।

प्रस्तुति : राकेश सिंह 'सोनू'

शुरू के 6 महीना बाद ही मैं बिना बताये सेट छोड़कर घर भाग गया था : चेतन शर्मा, उड़ान फेम डायरेक्टर

मैं गोरखपुर यू.पी. से बिलॉन्ग करता हूँ, लेकिन मेरी पैदाइश और परवरिश सब मुंबई में हुई है। ग्लैमर इंडस्ट्री की तरफ कभी मेरा फोकस रहा ही नहीं लाइफ में। मगर एक चीज इतना पता था कि जो एक काम करूँगा उसे चेंज नहीं करूँगा। हम मीडिल क्लास फॅमिली से बिलॉन्ग करते हैं। पहले से कुछ प्लान नहीं था कि ग्रेजुएशन के बाद क्या करना है। घर में बोला गया कि अब अपने पैरों पर खड़े हो जाओ, कोई काम करो। फिर मैंने अपने एक अंकल से कहा– "काम क्या करूँ मैं ?" उन्होंने कुछ बोला नहीं। सिर्फ यही कहा– "कल सुबह 5 बजे तैयार होकर आ जाना।" मैं सुबह उठकर पहुँच गया उनके घर। वे बाइक निकाले अपना, मुझे बैठाएं और लेकर चले गएँ। बारिश भी हो रही थी। याद है मुझे गोरेगांव में बाला जी का सबसे बड़ा स्टूडियो है 'संक्रमण', वे वहां लेकर गएँ। मैं वहां कैमरा–लाइट देखकर चौंका, काम चालू था। कसौटी जिंदगी की शो का सूट चल रहा था। शो के डायरेक्टर मेरे अंकल के दोस्त थें। वे डायरेक्टर से मिलवाएं और बोलें– "मेरा भतीजा है, इसको रख लो अपने साथ।" वे बोले– "ठीक है।" अंकल उनसे कुछ बातचीत किये और फिर बाहर आकर मुझसे बोले– "देख, तू अभी इनके साथ लग जा और ये जैसा बोलेंगे वैसा ही करना।" मैंने कहा– "मगर मुझे तो ये सब करना होगा पता ही नहीं था।" तो अंकल ने एक बात बोली– "मैंने बचपन से तुझे ऑबजर्व किया है और तेरा जो दिमाग है ना वो क्रिएटिव माइंड वाला है। तू वैसा आदमी नहीं है जो 9 टू 6 वाली ड्यूटी कर सकता है। मुझे ऐसा लगा कि तुझे यहाँ पर होना चाहिए इसके लिए मैं तुझे यहाँ पर लेकर आया हूँ। बाकि ये रास्ता तेरा है, तू कहाँ तक जा सकता है और कहाँ तक अचीव करेगा ये तेरे को डिसाइड करना है।"

पहला दिन था मुझे कुछ काम का पता नहीं था। डायरेक्टर साहब बोलें– "जाओ जाकर आर्टिस्ट को बुलाकर ले आओ।" मैं गया बुलाने। सबसे पहले मैंने कसौटी जिन्दगी की सीरियल की मुख्य अभिनेत्री कामोलिका यानि उर्वशी ढ़ोलकिया का दरवाजा नॉक कर के बोला– "मैडम, शार्ट रेडी है. " तो मेरे को देखकर वे बोलीं– "तुम नए आये हो क्या यहाँ पर ?" मैंने बोला– "हाँ"। उन्होंने फिर पूछा– "कब ज्वाइन किया ?" मैंने कहा– "आज सुबह।" फिर वो हंसने लगीं और कहा– "चलो ठीक है आती हूँ।" तब बाद में मुझे मालूम चला कि उनका एक टाइमिंग होता है, जब वो सेट पर आती हैं और उनको कोई बुलाने जाता नहीं है। वो सेट पर आयीं तो मैं वहीं बैठा हुआ था। मेरे सामने जब कैमरा रोल हुआ और उनका जब एक्टिंग शुरू हुआ तो मैं जोर से हंस पड़ा। जबकि सेट पर शूट के वक्त साइलेंट होता है। वो मुझे देखीं और पूछ बैठीं "क्यों हंस रहे हो तुम" और इसी के साथ शूटिंग रुकवा दी। डायरेक्टर साहब तो हमारे पहचान के थें वो बुलाएँ हमें और पूछे– "क्या हुआ इसमें हंसनेवाली क्या चीज है? "मैंने कहा– "नहीं, बस मुझे एक्टिंग देखकर हंसी आ गयी।" वे बोले– "ठीक है, एक

बोलो जिंदगी के साथ संस्मरण साझा करते हुए चेतन शर्मा (बायें)

काम करो तुम पीछे बैठो, उनके सामने नहीं जाना वरना उनको बुरा लगेगा।" फिर पीछे बैठकर मैंने मॉनिटर पर देखना शुरू किया और पहला दिन ऑबजर्व करना शुरू किया कि होता क्या है। पहला दिन ऐसे ही निकल गया। मैं बहुत ज्यादा कन्फ्यूज था, समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। मैंने वहां 6 महीने असिस्टेंट में किया और मुझे ये बस ड्यूटी जैसा ही लगा। लेकिन मैं फ्रस्टेड हो गया अपनी लाइफ से। किसी को बताया नहीं और सेट छोड़कर घर भाग गया।

एक महीने तक मैं अपने घर पर बैठा था और झूठ बोलता रहा कि अभी शूटिंग बंद है, जब बुलाएँगे तब जाऊंगा। जब एक दिन अंकल का फोन गया डायरेक्टर साहब के पास तो वे बताएं कि वो लड़का तो आ ही नहीं रहा है। फिर अंकल घर पर आएं और वजह पूछी। "तो मैंने कहा– "समझ में नहीं आ रहा काम।" वे बोले– "फिर करेगा क्या तू ?" मैंने कहा– "मुझे लगा ही नहीं वहां कि मैं काम कर रहा हूँ।" वे बोले– "ठीक है चलो एक बार और ट्राई करके देखते हैं क्या होता है ?" फिर मुझे वे सेट पर लेकर गएँ। डायरेक्टर ने पूछा– "तुझे प्रॉब्लम क्या हो रही है ये बता ?" मैंने कहा– "सर, मुझे काम नहीं समझ में आ रहा कि आपलोग करते कैसे हो ?" उन्होंने बोला "एक काम करो, एक और डायरेक्टर हैं मैं तुझे उनके पास भेजता हूँ। एक बार उनके साथ जाकर काम करो। लेकिन एक बात याद रखना, उनके पास तू काम करेगा तो कोई गारंटी नहीं है वो तुझे मार भी देगा, गाली भी देगा। मतलब वैसे आदमी हैं जो अपने काम के प्रति बहुत परफेक्शन रखते हैं।" फिर मैं गया सोहेल तातारी के पास जो बड़े डायरेक्टर थें। मैंने उनके साथ पहले दिन जो काम किया मुझे मालूम हुआ कि काम होता क्या है। जो ऑबजर्वेशन उनकी स्क्रिप्ट पर होती है, जो एक्टर्स से उनकी बातचीत होती है और जो कैमरा एंगल लगवाते हैं वो मुझे अट्रैक्ट किया। फिर उनके काम को जब मैंने टेलीविजन पर देखा तब मुझे लगा ये चीज मुझे फील कर गयी है। फिर 6 महीने मैंने उन्हें असिस्ट किया।

सोहेल जी महीने में सिर्फ एक एपिसोड करते थें चार–पांच दिन का और बाकि के 26 दिन घर पर बैठकर सिर्फ चार दिनों में मैं कुछ बन नहीं जाता। तो उन्होंने मुझे दूसरे डायरेक्टर सिद्धार्त सेन गुप्ता के साथ काम पर लगाया और जो एक्च्युल काम है मैंने उनके साथ सीखा।

सिद्धार्थ सेन गुप्ता के साथ हमने एक शो शुरू किया था बालिका वधु। उनके 5 असिस्टेंट थें और उनमे पहले असिस्टेंट में मेरा नाम आने लग गया। फिर उन्होंने मुझसे पूछा– "तू करेगा क्या शो?" मैंने कहा– "अगर इंडिपेंडेंट मिलेगा तो जरूर करूँगा।" उन्होंने बताया कि एक शो आनेवाला है 'तेरे मेरे सपने' स्टार प्लस का, अगर तू चाहता है करना तो मैं बात करता हूँ वहां पर "? "मैंने कहा– 'आप कर लो बात।" उनके रिफ्रेंस से मुझे वो काम मिल गया। मेरी लाइफ का पहला शो था बतौर डायरेक्टर, तब मेरी उम्र 24 साल थी। शुरू में मैं डरा हुआ रहता था कि पता नहीं क्या होगा ? कैमरामैन भी मुझसे बहुत सीनियर थें और जितनी मेरी उम्र थी उतना उनका एक्सपीरयंस था। तो मैं उनको कैसे डायरेक्शन देता कि दादा ऐसे शॉट लगावो ? लेकिन मेरी घबराहट दूर होती गयी क्यूंकि वो बहुत सपोर्टिव निकलें। जब हमने शो शुरू किया चैनल को पसंद आया। चैनल को लगता था कि शो सिर्फ 100–150 एपिसोड करके जल्द ही बंद हो जायेगा। मगर ऐसा हुआ नहीं। साढ़े 6 सौ एपिसोड गया और दो साल तक चला। प्रोडक्शनवाले बोलते थें कि यह शो हमें अच्छा अर्न करके दे रहा

है।

एक बार ऐसा हुआ कि हमारी जो लीड हीरोइन थी उसके डैडी एक्सपायर हो गए और चलती शूटिंग में हमको यह बैड न्यूज मिला। पर कहते हैं कि शूटिंग ऐसी चीज है कि कभी रूकती नहीं है। हर दिन का एक टारगेट अचीव करना होता है। मतलब मेरी लाइफ का वह पहला शो, फिर मुझे ब्रेक मिलेगा की नहीं ये भी नहीं पता था। लेकिन फिर भी मैंने प्रोडक्शनवालों को बहुत रूडली कहा था कि "मैं शूटिंग नहीं करूँगा" और शूटिंग रोक दी थी। मेरा मानना था कि हम 16–17 घंटा सेट पर रहते हैं और यूनिट के साथ फैमली से ज्यादा वक्त बिताते हैं तो उनके सुख–दुःख का ख्याल भी हमें रखना चाहिए। तब सेट पर एक मातम सा छा गया था यह खबर सुनकर। ऊपर से प्रोडक्शन का प्रेशर था कि काम करना है। लेकिन मैंने कहा– "पहले आप इनको घर भेजने का बंदोबस्त कीजिये, जब ये घर चली जाएँगी तब हम काम शुरू करेंगे। रही बात टारगेट की तो हम पूरी यूनिट मिलकर पूरा कर लेंगे। यूनिट के लिए मैं फेवरेट था क्यूंकि मेरा नेचर ऐसा है कि मेरे साथ जितने भी काम करते हैं मैं उनके बारे में बहुत ज्यादा सोचता हूँ। फिर प्रोडक्शन वालों ने हीरोइन एकता तिवारी को फ्लाइट का टिकट कराकर उन्हें घर भेजा तब हमने काम शुरू किया।

बालिका वधु के वक्त ऐसा हुआ कि हमारे डायरेक्टर साहब सिद्धार्थ सेन गुप्ता सर का एक शो शुरू हो रहा था और उसका सेटअप करने के लिए उन्हें जाना था।

सेटअप करने के लिए उन्हें जाना था। तब उन्होंने प्रोडक्शनवालों से कहा– "जब तक हम कोई मेन डायरेक्टर लाएंगे तब तक चेतन को चांस दो, ये कर लेगा सूट।" प्रोडक्शन का भी मुझपर पहले से ही बहुत ज्यादा विश्वास था। बालिका वधु में बतौर डायरेक्टर काम करना बहुत बड़ा चैलेंज था क्योंकि वहां जितने भी एक्टर थें उनको किसी सीन को लेकर मुझसे ज्यादा एक्सपीरियंस हो गया था। काम शुरू किया, सारे एक्टर्स का मुझे सपोर्ट मिला, इस वजह से मैं वहां अपना बेस्ट दे पाया। मेन डायरेक्टर के रूप में मैंने लगभग एक साल वहां काम किया फिर तेरे मेरे सपने करने चला गया जो उसी कम्पनी का था। बालिका वधु का मैं मेन डायरेक्टर नहीं था। उसमे सीरीज डायरेक्टर, एपिसोडिक डायरेक्टर, यूनिट डायरेक्टर होता है। तो मैं बालिका वधु में असिस्टेंट से सेकेण्ड यूनिट डायरेक्टर बना। दो यूनिट डायरेक्टर होते हैं। एक थें प्रदीप जाधव और दूसरा मैं था। लेकिन तेरे मेरे सपने में मैं मेन डायरेक्टर था।

'उड़ान' सीरियल का जो कैमरामैन था वो मेरा अच्छा दोस्त था। मैंने उससे बात किया तो उसने मेरी मीटिंग प्रोड्यूसर से करा दी। जब मैं मिला तो प्रोड्यूसर बोलें– "ठीक है, करते हैं।" और 'बालिका वधु' के बाद तेरे मेरे सपने, एक चुटकी आसमान, प्रीतो, नादानियाँ करने के बाद मैं 'उड़ान' में आया था। इसके बाद 'मेरी दुर्गा' किया। सोनी लिव के लिए मैंने गुजराती वेब सीरीज 'काचो पापड़–पाको पापड़' किया। जब वेब सीरीज के प्रोड्यूसर से मेरी मीटिंग हुई थी और उन्हें पता चला कि मैं यू.पी. से हूँ तो उन्होंने कहा था, " मगर यह शो गुजराती है।" मैंने बोला था– "मगर सिनेमा की कोई भाषा नहीं होती है।" उन्हें यह बात पसंद आई फिर उन्होंने ओके कर दिया। गुजराती में काम करने का पहला अनुभव था और उसका जो रिजल्ट आया उसे देखकर चैनलवालों ने कहा– "हमलोग एक सीजन इसका और करेंगे।" मैंने बीच के खाली समय में भोजपुरी फिल्मों के 50 वर्ष पूरे होने पर 'भोजपुरी फिल्मों का सफरनामा' डाक्यूमेंट्री फिल्म शूट की। बिहार के कटिहार में जो गंगा कटाव की समस्या है उसपर एक डाक्यूमेंट्री की। स्टार प्लस पर शो 'कुल्फी कुमार बाजेवाला' का निर्देशन किया। लाइफ ओके पर शो 'बाजीगर' किया। आगे भविष्य में फिल्म करने की तमन्ना है। ❐

प्रस्तुति : राकेश सिंह 'सोनू'

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका बोलो जिंदगी का लोकार्पण

दिनांक 30 अगस्त 2024 को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका बोलो जिंदगी का लोकार्पण बिहार विधान सभा के माननीय अध्यक्ष श्री नंद किशोर यादव जी के हाथों उनके ही सरकारी आवास पर (संख्या – 2, स्टैंड रोड, पटना) संपन्न हुआ।

बिहार विधान सभा अध्यक्ष श्री नंद किशोर जी ने पत्रिका का विमोचन करते हुए कहा कि, वर्षों बाद ऐसी 'बोलो जिंदगी' के रूप में पत्रिका देखने पढ़ने को मिली जो सकारात्मक जिंदगी से हमें जोड़ते हुए हमारे आस पास की नकारात्मकता को खत्म करने की कोशिश करती है। पत्रिका में राजनीति से इतर कला संस्कृति और सामाजिक सरोकारों को ज्यादा महत्व दिया गया है और ऐसे चुनौतीपूर्ण कदम के लिए पत्रिका 'बोलो जिंदगी' के युवा संपादक राकेश कुमार सिंह को हार्दिक बधाई देता हूं।

वहीं पत्रिका 'बोलो जिंदगी' के संपादक राकेश कुमार सिंह ने कहा कि, यह पत्रिका मुख्य रूप से कला एवं संस्कृति और सामाजिक सरोकारों पर केंद्रित है। जिसे पढ़कर जिंदगी से निराश हो चुका व्यक्ति भी कुछ पल के लिए सकारात्मक हो उठता है। उन्होंने बताया कि चुनाव की वजह से पत्रिका का लोकार्पण तब नहीं कर पाएं थें इसलिए चुनाव बाद अगस्त माह में इसके लोकार्पण का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

प्रबंध संपादक, प्रीतम कुमार ने कहा कि, 'बोलो जिंदगी' मासिक पत्रिका के किसी भी अंक को अगर आप कुछ माह, वर्ष बाद भी पढ़ें तब भी नयेपन का एहसास होगा।

वहीं विशिष्ठ अतिथि बिहार भाजपा के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य आनंद पाठक ने कहा कि पहली बार ऐसी पत्रिका देख रहा हूं जो कला संस्कृति एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति समर्पित है। यह पत्रिका अन्य पत्रिकाओं से बिल्कुल अलग है। इस साहसिक कदम के लिए मैं पत्रिका के संपादक को अनंत शुभकामनाएं देता हूं।

बोलो जिंदगी पत्रिका लोकार्पण के बाद संपादक ने कार्यक्रम में मौजूद पत्रिका के कुछ नियमित कॉलम राइटर्स, डॉ. किशोर सिन्हा (सैलानी की डायरी), जितेंद्र कुमार सिन्हा (राजनीति), ज्योतिषाचार्य उमेश उपाध्याय (ग्रह गोचर), किरण उपाध्याय (किरण उपाध्याय की रसोई), निशांत कुमार प्रधान (वित्तीय सुझाव) से परिचित कराया।

संपादक राकेश सिंह ने बताया कि बोलो जिंदगी पत्रिका में न्यूज की जगह संघर्षिल व्यक्तियों की कहानी और जिंदगी में प्रेरित करने वाली घटनाओं की प्रमुखता होती है। ❐

गुरु जी से शादी हुई थी इसलिए उनसे थोड़ा डर भी लगता था

—बिन्नी बाला
संस्कृत शिक्षिका, राजकीय त्रिभुवन
हाई स्कूल, नौबतपुर

मेरा मायका पटना से थोड़ी दूर खगौल, दानापुर में है। मेरे पिता जी हाई स्कूल में टीचर थें। तीन बहन एक भाई में सबसे बड़ी मैं ही हूँ। ग्रेजुएशन खगौल महिला कॉलेज से किया। शादी के पहले ग्रेजुएशन की परीक्षा दे चुके थें और शादी बाद ठीक बिदाई के दूसरे दिन मेरा रिजल्ट आया था। 9 वीं कक्षा से ही पं. कपिलदेव सिंह जी के संस्थान में संगीत सीखना शुरू कर दिए थें। गुरु जी तो खुद तबला बजाते थे लेकिन संगीत सिखाने वहाँ और दूसरे लोग आते थें। सीखने के दौरान ही एक प्रोग्राम में उनके गांव जाना हुआ। तब मेरी इंटर की परीक्षा होनेवाली थी। वहीं पर पहली बार अपने पतिदेव को देखी थी। गुरु जी अपने गांव एक सूर्य मंदिर का निर्माण करवाए थें जिसका उद्घाटन था। सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी था। जब पहली बार अपने पति को देखें तो वो मेरे पसंदीदा सफेद रंग का कुर्ता—पायजामा पहने हुए थें। वहां सूर्य मंदिर के चबूतरे पर बैठकर वे गायन कर रहे थें। सूर्य की किरणों की वजह से वे चंद्र की भांति सुशोभित हो रहे थें। उस दिन हम सिर्फ यही जान पाएं कि वे बहुत अच्छा गाते हैं और उनका नाम रजनीश है। फिर हम सभी गुरु जी के साथ प्रोग्राम खत्म होने के तुरंत बाद घर लौट आएं। लेकिन वापस आने के बाद रजनीश जी के प्रति मेरे मन में एक प्यार का बीज अंकुरित हो चुका था।

गुरु जी के संस्थान में हमलोग संगीत सीखने आते थें, उसी क्रम में वहां आनेवाले हमारे एक पुराने गुरु हीरा लाल मिश्र सिखाने आते थें। उनकी उम्र काफी हो चुकी थी और जब उनको आने—जाने में दिक्कत होने लगी तब वो हमें सिखाना छोड़ दिए। कुछ दिन वैसे ही चलता रहा फिर अचानक से संस्थान वाले गुरु जी बोलें कि "अब से रजनीश आएगा सिखाने।" यह सुनकर मेरे मन

में खुशी के लड्डू फूट पड़े। फिर रजनीश जी संस्थान आना शुरू किये लेकिन उनके बारे में हम कुछ ज्यादा जानते नहीं थें। मेरे मन में तो उनके लिए दूसरा वाला ही भाव था लेकिन वे कुछ जानते नहीं थें इसलिए हम दोनों में गुरु–शिष्य वाला रिश्ता ही चल रहा था। गुरु जी बाद में पटना चले गए तो उनका म्यूजिक इंस्टीच्यूट भी पटना शिफ्ट हो गया। तब पापा बोले– "अब तुम पटना सीखने जाओगी तो तुम्हें दिक्कत होगी, इसलिए छोड़ दो।" लेकिन मेरे मन में तो रजनीश जी से मिलने की अभिलाषा थी और कम–से–कम 6 साल म्यूजिक सीखना था तो हमलोग पटना गुरु जी के इंस्टीच्यूट जाने लगें। पटना गुरु जी के इंस्टीच्यूट में सप्ताह में एक दिन हम बस में जाते थें जहाँ रजनीश जी सिखाने आते थें। इसलिए हर रविवार का बेसब्री से इंतजार रहता था। तब हम बी.ए. पार्ट 1 में थें। मेरे पापा जब पहली बार रजनीश जी से मिले तो बहुत प्रभावित हुए। फिर धीरे–धीरे मिलना–मिलाना शुरू हुआ। एक दिन गुरु जी जब हमारे यहाँ आएं तो वो खुद से ही मेरे रिश्ते का प्रस्ताव मेरी मम्मी को दिए कि "लड़की की शादी करनी है ना।" उनका इशारा रजनीश जी की तरफ था कि "सजातीय लड़का है, दोनों को संगीत पसंद है तो रिश्ता कर दिया जाये।" तब गुरु जी को हमारे मन की बात नहीं मालूम थी और ना ही मैंने कभी घरवालों को कुछ बताया था। बस यूँ ही घर में अक्सर मेरे मुँह से रजनीश जी की तारीफ सुनकर घरवालों को एहसास हो गया था कि मैं उनको पसंद करती हूँ। तो जब रजनीश जी के पास प्रस्ताव गया तो वे सीधे इंकार कर दिए कि "अरे ऐसे कैसे ? ये लड़की तो मुझसे संगीत सीखती है, शिष्या है मेरी तो शादी क्या करना।" उनकी तरफ से वैसा कुछ इंट्रेस्ट नहीं था तो फिर बात खत्म हो गयी। उसके बाद मैं जब क्लास में जाती और सीखते वक्त कुछ गलती हो जाती तो बाकियों की गलती छोड़कर सिर्फ मुझपर वे अपने अंदर का सारा गुस्सा उढ़ेल देते थें। ऐसा डांटते थें कि कितनी बार मैं क्लास में रो दी थी। फिर सीखने–सिखाने का कार्यक्रम वैसे ही चलता रहा। मेरी मम्मी भी बहुत प्रयास की और इनके परिवारवालों से मिली। बात बनने में पांच साल का वक्त लग गया। इनके बहन–बहनोई का भी बहुत हाथ रहा। मेरे पति रजनीश जी कहते हैं कि "उनकी तरफ से लव मैरेज था और मेरी तरफ से अरेंज मैरेज।" 2002 में हमारी शादी हुई। शादी बाद विदाई कर हम इनके गांव नौबतपुर गएँ तभी अगले दिन यह खबर सुनने को मिली कि मेरा ग्रेजुएशन का रिजल्ट आ गया है, मैं पास हो गयी हूँ। ❐

भोजपुरी सिनेमा के पितामह हैं नाजिर हुसैन

✍ मनोज भावुक
भोजपुरी सिनेमा के इतिहासकार,
फिल्म गीतकार व
भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के संपादक

जन्मतिथिः 15 मई 1922
पुण्यतिथिः 16 अक्टूबर 1987

पहली भोजपुरी फिल्म 'गंगा मईया तोहे पियरी चढ़इबो' के प्रदर्शन के दो साल बाद भोजपुरी फिल्मों के पितामह नाजिर हुसैन साहब का यह आलेख 'धर्मयुग' में प्रकाशित हुआ था। हम बात उनके आलेख से ही शुरू कर रहे हैं। उनके आलेख का महत्वपूर्ण अंश पढ़िए–

राजेन्द्र बाबू के गांव की भाषा में बनी बहुचर्चित फिल्म–नाजिर हुसैन (23 फरवरी, 1964)

'हे भईया! हमनीके बोली में फिलिम नाहीं बनी हो?'

जेठ माह की एक शाम जब मैं अपने गांव में दिनभर खेत में काम करने के बाद अपनी दुआरी पर चंद गांव–भाइयों के साथ बैठा था, तो एक ने उक्त प्रश्न किया। निःसंदेह उसका यह प्रश्न' फिल्म 'गंगा जमना' से ही अभिप्रेरित था। मैंने छोटा–सा उत्तर दे दिया : 'जरुर बनी।'

हर साल मैं जेठ में अपने गाँव जाता हूं, माह दो माह के लिए, जबकि उस मौसम में अधिकांश लोग कड़कड़ाती धूप से बचने के लिए शिमला, मसूरी आदि पहाड़ी जगहों में चले जाते हैं। मैं भूमि–पुत्र हूं। भूमि से मेरा अनमिट लगाव है। अतः गर्मी की चिन्ता किये बिना मैं बम्बई से गाजीपुर की ओर मुख कर लेता हूं। उस माह में गांव जाने पर एक लाभ यह होता है कि बड़ी बहार रहती है वहां। शादी–ब्याह भी अधिकतर उसी माह में हुआ करते हैं। गांव में बड़ी उमंग रहती है।

लगभग तीन साल पूर्व गांव की ही एक बारात में दिलदार नगर गया हुआ था। उस समय दानापुर के खगौल रेलवे सिनेमा में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त फिल्म 'अनुराधा' लगने वाली थी। रेलवे के दानापुर शाखा के डिविजनल सुपरिंटेंडेंट मास्टर जी को मालूम हुआ कि मैं दिलदार नगर आया हुआ हूं और उन्हें यह भी मालूम था कि मैं कुछ समय तक रेलवे की सेवा भी कर चुका हूं। अतः उन्होंने मुझे आमंत्रित किया कि 'अनुराधा '' के प्रदर्शन के वक्त उपस्थित रहूं। उनका आग्रह मैं टाल न सका और दानापुर पहुंच गया। वहीं गेस्ट हाउस में कुछ पत्रकार मुझसे मिलने आये। बातचीत के दौरान एक ने पूछा– 'नाजिर साहेब! भोजपुरी भाषा में फिल्म नहीं बन सकती क्या?' और उसी क्षण मुझे उस ग्रामीण भाई के प्रश्न की याद आ गयी। मैंने उन्हें बताया कि यह प्रश्न मुझसे पहले भी किया जा चुका हैं और मैं इस पर गम्भीरता से विचार कर रहा हूं। कहानीकार नहीं हूं मैं, फिर भी कहानी का खाका करीब–करीब तैयार कर लिया है मैंने।

अपने ग्रामीण भाई के प्रश्न के बाद ही हमारे गांव का एक मस्त व्यक्ति मेरे पास आया। उसकी तारीफ यही है कि ताड़ी में उसने सब कुछ गंवा दिया है, फिर भी मस्त है। उसकी मस्ती ने मुझे सोचने पर मजबूर किया और विश्लेषण करने पर मैंने पाया कि शराब ने मध्यम वर्ग से बढ़कर अहित किसी का भी नहीं किया। मजदूरों के घर में दर्जन लोग कमाते है और अगर कोई एक–दो शराब पीता है तो खास नुकसान नहीं होता। धनी वर्ग शराब में पैसे उड़ा देता है, तो उसका कुछ बिगड़ता नहीं, क्योंकि अफरात पैसा, निकलने का रास्ता खोजेगा ही। रह गया बेचारा मध्यम वर्ग! अगर वह शराब के चक्कर में पड़ गया, तो उसकी रोटी भी चली जाती है और इज्जत भी। सबसे महंगी इज्जत तो मध्यम वर्ग की ही है न !

मैंने और थोड़ा विश्लेषण किया भोजपुरी बोलनेवालों कि संख्या करोड़ो में है। इसके समझने वालों की संख्या तो और भी अधिक है। फिर अगर बंगला, मराठी, गुजरती, मलयालम आदि में फिल्में बन सकती हैं तो भोजपुरी में क्यों नहीं बन सकतीं ? दूसरा विचार आया कि अगर भोजपुरी फिल्म बनायी जाय तो उसकी कहानी का आधार क्या हो?

बहुत सोच–विचार के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि कहानी जमीन की होनी चाहिए, अर्थात् किसान की, जिसमें वह अपना रूप देख सके और तब फिर उस मस्त पियक्कड़ की याद आ गयी मुझे। मैंने उसी को आधार बना कहानी का ताना–बना बुना और उससे तैयार हुई, 'गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबो'।

कहानी तो तैयार हो गयी, परन्तु इसे बनायेगा कौन? फिल्म है कमर्शियल

आर्ट, फिर क्यों कोई यह प्रयोग करने लगा? कई लोग आये मेरे पास। राजे–महाराजे भी पैसे लगाने को तैयार हुए। परन्तु उन सबको चाहिए थी चमक–दमकवाली कहानी। यह नहीं कि उन्हें कहानी पसंद नहीं आयी, परन्तु लगभग दो लाख रूपये का जोखिम उठाने की हिम्मत उनमें नहीं थी। बम्बई के लोगों ने सुना, तो कइयों ने मजाक उड़ाया– "भइयों (उत्तर भारतीय बम्बई में 'भइया' कहकर पुकारे जाते हैं, खासकर दूध का व्यापार करनेवाले) की जबान में पूरी फिल्म! सफल होइबे करी।" मुझे इन सब बातों से कुछ निराशा तो हुई, पर लगन बनी रही और तब एक सज्जन आये निर्माता बनकर, जो वाकई निर्माता के सेवक थे। उन्होंने मेरा परिचय विश्वनाथ प्रसाद से कराया। मैंने उन्हें कहानी सुनायी और वे रो पड़े।

उन्होंने कहा कि वे इस कहानी को फिल्मायेंगे और भोजपुरी में ही। मैंने उन्हें बहुत समझाया कि वे इस फिल्म में अपने रुपयों के साथ खिलवाड़ न करें, क्योंकि परिणाम यह भी निकल सकता है कि बनने के बाद सिर्फ उनके गांव वाले और बाल–बच्चे ही उस फिल्म को देखें। परन्तु उन्होंने भी जिद पकड़ ली और इस तरह फिल्म का श्रीगणेश हो गया।

यों तो पूरी फिल्म बनने में कई अडचनें सामने आयीं, परन्तु एक अड़चन अगर निर्माता महबूब नहीं सुलझाते, तो शायद फिल्म बनती ही नहीं। तब कुमकुम उनकी एक फिल्म में काम कर रही थी और बिना उनकी अनुमति के वह और कहीं काम नहीं कर सकती थी। 'सुमितरी' के लिए मुझे सिर्फ वही जंचती थी। एक बार तो महबूब साहब ने इन्कार भी कर दिया, पर मेरे सत्याग्रह के सामने उन्हें भी हार माननी पड़ी, वह हार जो कि उनके लिए विजय ही थी।

फिल्म बनी। 22 फरवरी 1963 को वह

पटना में प्रदर्शित हुई। (स्व.) राजेन्द्र बाबू उसका उद्घाटन करने वाले थे, लेकिन अस्वस्थ हो जाने के कारण वे उपस्थित नहीं हो सके। फिर भी उनके लिए विशेष प्रदर्शन की व्यवस्था की गयी। फिल्म देखने के बाद उन्होंने इतना ही कहा– "ए भाई ! इ अइसन जनाता कि हम कौनो फिलिम ना देखलीं हं। अइसन बुझात रहल ह कि कौनो गांव में बइठल कौनो लीला देखत रहीं।" मैं तब उपस्थित नहीं था, परन्तु जब उनके उद्गार सुने, तो मेरा दिल हर्ष से फूल उठा। एक कलाकार के लिए इससे बढ़कर सम्मान और गर्व कि बात क्या हो सकती है कि उसकी कृति की प्रशंसा इतने निर्मल शब्दों में की जाये।

मुझे खुशी है कि जनता ने इस फिल्म को दिल से पसन्द किया और जिस व्यक्ति ने लाखों रूपये का जोखिम उठाया, उसकी झोली भी भर गयी। 'भइयों कि जबान' कहकर मजाक उड़ाने वाले आज इस क्षेत्र में प्रवेश करने की तैयारी कर रहे हैं और कई तो कर भी चुके हैं।

भोजपुरी हिन्दी की एक शाखा है। पर यह हमारे गांवों की तरह ही मीठी है। अगर इसकी मिठास को कायम रखते हुए भोजपुरी फिल्मों का निर्माण किया गया, तो वह दिन दूर नहीं कि उत्तर भारत के ग्रामीण देश के किसी भी कोने में जाकर अपने को अजनबी महसूस नहीं करेंगे। फिर, भोजपुरी के प्रसार से हिन्दी का प्रसार भी तो होता ही है।

नाजिर हुसैन की कहानी

नाजिर हुसैन के लेख से पता चल ही गया कि उन्हें भोजपुरी से कितना प्यार था। आज जो 2000 करोड़ कीमत वाली भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री है, उसकी नींव रखी नाजिर हुसैन ने लेकिन दुखद यह है कि उनके नाम पर यह इंडस्ट्री कुछ भी नहीं करती।

नाजिर हुसैन ने अपने जीवन में कई रंग देखा। वह गाजीपुर के एक गाँव उसिया में पैदा हुए और रेलवे में नौकरी करने से लेकर द्वितीय विश्व युद्ध लड़ने तक की कहानी से गुजरे। फिर जापान में बंदी हुए, उसके बाद नेता जी सुभाष चंद्र बोस के आजाद हिन्द फौज को जॉइन किया, फिर कलकत्ता आकर थियेटर किया, फिल्मों की कहानी लिखी और उसके बाद बन गए हिन्दी–भोजपुरी फिल्मों के शानदार अभिनेता। कई यादगार फिल्में बनाई। सोचिए एक आदमी अपने जीवन में क्या–क्या कर गुजर गया।

नाजिर हुसैन कैसे बने आजाद हिंद फौज के सिपाही ?

गंगा पार कमसार स्थित उसिया गाँव में 15 मई 1922 को नाजिर साहब का जन्म हुआ। उनके बाबूजी साहबजादा खान रेलवे में गार्ड थे और लखनऊ में उनकी पोस्टिंग थी, तो बालक नाजिर का पालन–पोषण लखनऊ में हुआ। बाद में वहीं पढ़ाई–लिखाई के बाद रेलवे में फायरमैन के रूप में नियुक्ति हुई। तब द्वितीय युद्ध का खतरा हर जगह मंडरा रहा था। ब्रिटेन भारत में भी सैनिकों की बहाली कर रहा था ताकि वह विश्व युद्ध में ब्रिटेन के लिए लड़ सके। नाजिर साहब की जंग में तैनाती पहले मलेशिया और फिर सिंगापुर में हुई। ब्रिटेन जापान से जंग हार गया, तब लगभग 60 हजार सिपाहियो के साथ नाजिर हुसैन भी बंदी हो गये। वहाँ जापानी सेना का अत्याचार भी सहना पड़ा। नाजिर साहब ने कैद में ही दुःख–दर्द भूलने के लिए नाटक लिखना और अभिनय करना शुरू कर दिया।

एक बार जब सुभाष चंद्र बोस जापान में भारत के बंदी सिपाहियों से मिलने गए तो नाजिर हुसैन के लिखे नाटक का मंचन उनके सामने हुआ। बोस वह नाटक देखके बहुत प्रभावित हुए। सुभाष चंद्र बोस ने सिंगापुर रेडियो पर नाजिर हुसैन का कार्यक्रम भी कई बार सुना था। उन्होंने उसी समय सुभाषचन्द्र बोस को आजाद हिन्द फौज में शामिल कर लिया।

नाजिर हुसैन सिपाही से कैसे बने स्टार अभिनेता ?

आजाद हिन्द फौज के विघटन और भारत की आजादी के बाद जब नाजिर हुसैन भारत आए तो कलकत्ता में न्यू थिएटर में नाटक करने लगे। तब बिमल रॉय आजाद हिन्द फौज और सुभाष चंद्र बोस पर फिल्म बनाने की सोच रहे थे और वह एक ऐसे आदमी की तलाश में थे जो आजाद हिन्द फौज में रहा हो। उनकी मुलाकात नाजिर हुसैन से हुई और वह नाजिर साहब की आवाज और उनके व्यक्तित्व से इतने प्रभावित हुए कि उन्हें अपना सहायक रख लिया।

वहीं 'पहला आदमी' फिल्म का निर्माण हुआ जो 1950 में रिलीज हुई। नाजिर साहब उस फिल्म में मुख्य भूमिका में थे। पटकथा और संवाद भी उन्होंने ही लिखा था।

इस पहली फिल्म ने ही नाजिर साहब को स्थापित कर दिया। वह स्टार बन गये। फिर तो बिमल रॉय के अधिकांश फिल्मों में नजर आने लगे। बिमल रॉय की क्लासिक फिल्मों 'दो बीघा जमीन,' और 'देवदास' में भी नाजिर हुसैन का विशेष रोल था। नाजिर हुसैन फिल्म 'मुनीम जी' में पहली बार देवानंद के साथे दिखे। इस फिल्म की भी पटकथा–संवाद उन्होंने ही लिखा था। देवानंद और नाजिर साहेब की दोस्ती यहाँ से शुरू होकर आजीवन चली। अपने करियर में उन्होंने लगभग 500 से अधिक फिल्मों में काम किया। वह हिन्दी सिनेमा के एक मशहूर चरित्र अभिनेता के रूप में बहुत सफल हुए।

भोजपुरी फिल्मों के पितामह हैं नाजिर हुसैन

नाजिर साहब तब बहुत व्यस्त हो गए, उनकी लगातार फिल्में आ रही थीं, हर जगह उनकी डिमांड थी। इसी दौरान तत्कालीन राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू से मुंबई में एक फिल्म समारोह में उनकी मुलाकात हो गई। जब राजेन्द्र बाबू जानें कि नाजिर हुसैन भोजपुरी भाषी हैं तो उन्होंने भोजपुरी में ही कहा कि रउआ जइसन भोजपुरी भाषी कलाकार बा तबो भोजपुरी में अभी ले कौनो फिल्म ना बनल? यह बात नाजिर जी को लग गई। उन्होंने बड़ी तन्मयता से 'गंगा मईया तोहे पियरी चढ़इबो की स्क्रिप्ट लिखी और प्रोड्यूसर के तलाश में जुट गये। संजोग से उनकी मुलाकात विश्वनाथ शाहाबादी से हो गई और वह फिल्म निर्माण के लिए तैयार हो गए। भोजपुरी की पहली फिल्म बनी 'गंगा मईया तोहे पियरी चढ़इबो' । 1962 में फिल्म रिलीज हुई। यह फिल्म इतनी जबरदस्त हिट हुई कि भोजपुरी जगत में भूचाल सा आ गया। बड़े–बड़े निर्माता भोजपुरी फिल्म बनाने लगे।

इसके बाद नाजिर हुसैन ने हमार संसार से बतौर प्रड्यूसर शुरुआत की। 1979 में नाजिर हुसैन ने सुपरहिट भोजपुरी फिल्म बलम परदेसिया भी बनाई थी। अपने लगभग सभी फिल्मों के अभिनेता तो वह थे ही बतौर निर्देशक उन्होंने 'बलम परदेसिया' और 'रूस गइलें सइयां हमार' जैसी सफल फिल्में दीं। उनके भोजपुरी फिल्मों में भोजपुरिया लोक संस्कृति, ग्रामीण जीवन और लोक–रंग का प्रभाव सर चढ़ के बोलता है।

फिल्मों को लेकर एक एक्टर–राइटर–डाइरेक्टर के लिए इससे बड़ी बात और क्या होगी कि आखिरी सांस तक फिल्म निर्देशन करते रहे। कहते हैं कि 'टिकुलिया चमके आधी रात' के निर्देशन के दौरान ही निधन हुआ था, 16 अक्टूबर 1987 को मुंबई में।

आज नाजिर हुसैन साहब भले इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन लाखों लोगों के रोजगार और करोड़ों लोगों के मनोरंजन के लिए भोजपुरी फिल्म उद्योग का निर्माण कर गए हैं।

नाजिर साहेब को इस बात के लिए हमेशा याद किया जाएगा कि हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में स्थापित एक बड़े कद के अभिनेता ने भोजपुरी सिनेमा को प्रतिष्ठा के साथ स्थापित कर दिया और दुनिया छोड़ने से पहिले सिनेमा जगत में भोजपुरी का परचम लहरा दिया। ❐

गांधी जी के सपनों का आश्रम : भीतिहरवा

✍ डॉ. किशोर सिन्हा
वरिष्ठ नाटककार और मीडिया–विशेषज्ञ

इतिहास का भी अपना वर्तमान हुआ करता है और शताब्दियां बीत जाने के बाद भी इतिहास वर्तमान बनकर जन–जन को उत्प्रेरित और समय–सापेक्ष करता चलता है। एक ऐसा ही इतिहास चम्पारण की धरती पर गोरों की बर्बरता और मासूम कृषकों के खून से लिखा गया, जिसकी परिणति एक महात्मा के अहिंसात्मक और ऐतिहासिक कदम से हुई, पूरा विश्व जिन्हें महात्मा गांधी के रूप में याद करता है।

गांधी जी ने 20 नवम्बर, 1917 ई. को भीतिहरवा में एक कुटिया एवं पाठशाला की स्थापना की। स्थापना के बाद से ही पाठशाला का कार्य आरंभ हो गया। 28 नवम्बर को गांधी जी अपनी पत्नी कस्तूरबा गांधी तथा राजकुमार शुक्ल के साथ भीतिहरवा आए। श्रीमती गांधी तब पाठशाला में शिक्षिका का कार्य करने लगीं।

इस भीतिहरवा का एक इतिहास है। उसकी तह में गए बिना हम भीतिहरवा को नहीं समझ सकते। तब पाठशाला खोलने के लिए जमीन की तलाश के लिए राजकुमार शुक्ल और संत भगत जी भी साथ गए थे। वहां से वे श्रीरामपुर होते हुए भीतिहरवा पहुंचे। यह भीतिहरवा जो अभी एक संग्रहालय के रूप में प्रदर्शित है। इसी के बगल में एक मन्दिर था, जिसमें बाबा रामनारायण दास जी रहते थे। मंदिर की जो जमीन थी, वो रामनगर स्टेट की थी, जिस पर अंग्रेजों का कोई अधिकार नहीं था। महात्मा गांधी ने जमीन के लिए कुटी बनाने के लिए कहा, तो अंग्रेजों के डर से कुटी के लिए जमीन देने के लिए कोई तैयार नहीं हो रहा था। यहीं मुरली भरहवा के बगल में ए. सी.

एमन की कोठी थी। बाबा रामनारायण दास ने गांधी जी से कहा कि तुम जितना दूर घूम जाओगे, उतनी जमीन मैं आपको दे दूंगा। कहते हैं कि गांधी जी लगभग 11 कट्ठा 5 धुर जमीन में घूमे। इसके बाद बाबा रामनारायण दास ने इस जमीन को गांधी जी के नाम से ट्रस्ट बनाके 1917 में इसकी रजिस्ट्री कर दी। उसके बाद, 1951 से लेकर 1970 तक यह गांधी निधि से संचालित होता रहा है।

यह प्रामाणिक सत्य है कि बेलवा कोठी के एमन साहब ने अपने आदमियों द्वारा कुटिया में आग लगवा दी थी। इसके बाद स्वयंसेवकों तथा ग्रामीणों के सहयोग से ईंटों का एक भवन बना दिया गया। कहते हैं कि इस पाठशाला के निर्माण में कस्तूरबा गांधी ने भी ईंट ढोने का कार्य किया था। इस पाठशाला में 12 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को शिक्षा दी जाती थी। पाठशाला में पढ़ाने वाले स्वयंसेवक बच्चों के साथ गांव की स्त्रियों और पुरुषों को भी सुशिक्षित करने का कम करते थे। वो लड़कों को कपड़ा बुनना, सड़क साफ करना और बच्चों को साफ–सुथरा रखने के लिए स्त्रियों को भी शिक्षा देते थे। कस्तूरबा भी गांधी जी के साथ भीतिहरवा में रहीं और बच्चों को पढ़ाने–लिखाने तथा जनचेतना जगाने का कार्य करती रहीं।

गांधी जी ने प्रथम बार 15 अप्रैल, 1917 को मोतिहारी में, फिर 22 अप्रैल को हजारीमल धर्मशाला, बेतिया में, और 27 अप्रैल को मुरलीभरहवा एवं भीतिहरवा गांव में पं. राजकुमार शुक्ला के प्रयास से चम्पारण की धरती को अपने कदमों से पवित्र किया। वैसे चम्पारण आने से पूर्व गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में एक बड़ा संघर्ष और युद्ध जीत चुके थे। राजकुमार शुक्ल गांधी जी को नील किसानों की दयनीय दुरवस्था दिखाने चम्पारण लाए थे। ये गांधी जी ही थे जिन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध न सिर्फ संघर्ष का बिगुल फूंका

बल्कि उन्होंने अपनी लड़ाई गुलामी की मानसिकता के खिलाफ शुरू की। इस मुहिम में उनका साथ दिया, बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, रामनवमी प्रसाद और धरनीधर बाबू ने। 15 अप्रैल, 1917 को गांधी जी मोतिहारी पहुंचे और उन्हें वहां बाबू गोरखनाथ प्रसाद वकील के घर ठहराया गया। अंग्रेजों के अत्याचार एवं शोषण से मुक्ति के लिए किसान आन्दोलन के नेता राजकुमार शुक्ल के नेतृत्व में मोहनदास करमचन्द गांधी को चम्पारण बुलाने के लिए तीन व्यक्तियों को जिम्मेदारी सौंपी गयी– पं. राजकुमार शुक्ल ग्राम–मुरलीभरवा, श्री सन्त भगत ग्राम–अमोलवा और पीर मुहम्मद मुनीस, ग्राम– बेतिया। सर्वसम्मति से यह भी तय हुआ कि शेख़ गुलाब, शीतल राय और राजकुमार शुक्ल, 1916 ई. में लखनऊ में होने वाले कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में अपनी बात रखेंगे। इस सम्मेलन में किसानों के प्रतिनिधि राजकुमार शुक्ल को पहली बार किसान मंच से संपूर्ण भारत के प्रतिनिधियों के सामने किसानों पर हो रहे अत्याचार एवं शोषण का वर्णन करने का मौका मिला। गांधी ने देखा कि ये आदमी तो समर्पित है। गांधी जी ने तो कहा ही है कि जो सत्याग्रही होगा, उसे अपनी हैसियत दूसरे से नीचे में समझना होगा।

16 अप्रैल को गांधी जी हाथी पर सवार होकर रामनवमी प्रसाद के साथ जसवलपट्टी रवाना हुए। रास्ते में पुलिस के दरोगा ने गांधी जी को चम्पारण के जिला मजिस्ट्रेट डब्ल्यू. बी. हिकॉक का पत्र दिया। पत्र में लिखा था कि आप के चम्पारण आने से शांति–व्यवस्था भंग होने और प्राणहानि होने का खतरा है, अतः चम्पारण आने का विचार त्याग दें। गांधी जी ने उस आदेश को मानने से इन्कार कर दिया और इसके लिए किसी भी दण्ड को भुगतने का फैसला कर लिया। इसके बाद गांधी जी ने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और सी.एफ. एन्ड्रयूज से चम्पारण आने का निवेदन किया।

18 अप्रैल, 1917 को महात्मा गांधी पर सरकारी आदेश तोड़ने के आरोप में कार्रवाई शुरू हुई। 18 अप्रैल को एस.डी.ओ. मोतिहारी के कार्यालय में महात्मा गांधी को उपस्थित होने का आदेश मिला, जहां धारा 144 और 188 के उल्लंघन के आरोप में उन्हें सफाई देनी थी। गांधी जी ने अपनी सफाई में कहा था– ''अदालत की आज्ञा से मैं यह संक्षेप में बतलाना चाहता हूं कि नोटिस द्वारा जो मुझे आज्ञा दी गयी, उसकी अवज्ञा मैंने क्यों की। मेरी समझ में यह स्थानीय अधिकारियों और मेरे मध्य में मतभेद का प्रश्न है। मैं इस देश में राष्ट्रीय तथा मानव–सेवा करने के विचार से आया हूं। यहां आकर उन रैयतों की सहायता करने के लिए, जिनके साथ कहा जाता है कि नीलवर अच्छा व्यवहार नहीं करते। मुझसे बहुत आग्रह किया गया था। पर जब तक मैं सब बातें अच्छी तरह न जान लेता तब तक उन लोगों की कोई सहायता नहीं कर सकता था। इसलिए मैं यदि हो सके तो अधिकारियों और नीलवरों की सहायता से सब बातें जानने के लिए आया हूं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि जिस स्थिति में मैं हूं, उस स्थिति में प्रत्येक प्रतिष्ठित व्यक्ति को वही काम करना सबसे अच्छा है जो इस समय मैंने करना निश्चित किया है। और वो ये है कि बिना किसी प्रकार का विरोध किए, आज्ञा न मानने का दण्ड सहने के लिए तैयार हो जाऊं। मैंने जो बयान दिया है वो इसलिए नहीं कि जो दण्ड मुझे मिलने वाला है वो कम किया जाए। पर इस बात को दिखलाने के लिए कि मैंने सरकारी आज्ञा की अवज्ञा इस कारण से नहीं की है कि मुझे सरकार के प्रति श्रद्धा नहीं है बल्कि इस कारण से कि मैंने उस से भी उच्चतर आज्ञा अपने विवेक, बुद्धि की आज्ञा का पालन करना उचित समझा है।''

10 अप्रैल, 1917 को गांधी जी ने मोतिहारी के एस.डी.ओ. कोर्ट में जो लिखित वक्तव्य दिया वो एक ऐतिहासिक दस्तावेज है, जो बाद के दिनों में स्वतंत्रता– सेनानियों के लिए प्रेरणा का स्रोत सिद्ध हुआ। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए जिला प्रशासन ने 20 अप्रैल को मुकदमा वापस ले लिया। ऐतिहासिक जीत के बाद गांधी जी 22 अप्रैल, 1917 ई0 को बेतिया रवाना हुए। शाम में अपार जनसमूह के साथ हजारीमल धर्मशाला पहुंचे। उसी धर्मशाला में अपने सहयोगी

स्वतंत्रता– सेनानियों के साथ महीनों रहकर उन्होंने चम्पारण के हजारों शोषित, पीड़ित किसानों की व्यथा सुनी। इस धर्मशाला में पहली बार ग्रामीणों ने अपनी जुबान खोलने की हिम्मत जुटायी तथा 850 गांवों के लगभग 10000 किसानों ने नीलहे गोरों के अत्याचारों से संबंधित बयानों को लिखित रूप से दर्ज कराया। गांधी जी 22 अप्रैल को ब्रजकिशोर प्रसाद एवं राजकुमार शुक्ल के साथ लौरिकिया गांव गए। 26 अप्रैल को वे नरकटियागंज पहुंचे। 27 अप्रैल, 1917 को महात्मा गांधी, ब्रजकिशोर बाबू, रामनवमी बाबू, विंध्यवासिनी बाबू और अवधेश प्रसाद के साथ शिकारपुर होते हुए राजकुमार शुक्ल के घर मुरलीभरहवा पहुंचे। वे लोग बेलवा कोठी के नीलहा मैनेजर ए0सी0 एमन से मिलने भी गए और उस रात अमोलवा के संत राउत के घर ठहरे भी।

चम्पारण के गांवों में घूमते हुए गांधी जी ने भीतिहरवा में एक महुआ के पेड़ के नीचे बैठकर उपस्थित लोगों के सामने निरक्षरता दूर करने का संकल्प लिया। इस प्रकार मई 1917 ई0 से अक्टूबर–1917 तक लोगों के हालात का ब्यौरा इकट्ठा करते रहे। गांधी जी की लोकप्रियता से प्रभावित होकर बिहार के तत्कालीन गवर्नर सर एडवर्ड केट ने चम्पारण की स्थिति और मामले की जांच के लिए एक आयोग का गठन किया और गांधी जी को इसका सदस्य बनाया। इस जांच आयोग में नीलहों और जमींदारों के प्रतिनिधि के साथ किसानों के प्रतिनिधि के रूप में गांधी जी मौजूद थे। उन्होंने आयोग को यह समझाया कि तीनकठिया प्रथा को समाप्त करने हेतु 4 अक्टूबर, 1917 को जांच समिति ने सरकार से सिफारिश की है। एक कानून बनाकर, जिसे 'चम्पारण कृषि अधिनियम' कहा गया, तीनकठिया प्रथा को उठा लिया गया। साथ ही गोरे बागान– मालिकों को अवैध वसूली का 25 प्रतिशत हिस्सा किसानों को वापिस करना पड़ा। इस प्रकार नीलहों का राज अस्त हुआ, नील की खेती के अभिशाप से किसानों को मुक्ति मिली, चम्पारण की समस्या का समाधान हुआ तथा चम्पारण– सत्याग्रह की सफलता के फलस्वरूप गांधी जी राष्ट्रीय नेता के रूप में पहचाने गए और वे मोहनदास करमचन्द गांधी से महात्मा गांधी बन गए।

गांधी जी ने चम्पारण में शोषण और पिछड़ेपन को समाप्त करने के लिए पाठशालाएं स्थापित कीं। 26 नवम्बर, 1917 को महात्मा गांधी, श्री देवनन्दन सिंह, बीरबली सिंह और संत राउत के साथ श्रीरामपुर के प्रह्लाद भगत के घर पहुंचे तथा वहां से घूमते हुए भीतिहरवा मठ आकर पाठशाला खोलने के लिए जमीन की याचना की।

भीतिहरवा आज एक संग्रहालय के रूप में स्थापित है। भितिहरवा आश्रम बापू के जीवन से जुड़े भावनात्मक और सामाजिक जीवन में एक महत्वपूर्ण पड़ाव का प्रतिनिधित्व करता है जहां कई ऐसी चीजें देखने को मिलेंगी, जो अपने आप में अमूल्य हैं। यहां गांधी जी की अपनी बनाई हुई कुटी है, जो अपने कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर गीली मिट्टी से दीवार जोड़कर बनाई गई है। उनके व्यवहार की टेबुल है। मां कस्तूरबा के व्यवहार की चक्की है, जो वह अपने व्यवहार में रखती थीं। दोनों जिस कमरे में रहते थे वह कमरा संग्रहालय के रूप में प्रदर्षित है। कार्यकर्ताओं के रहने का खपड़ैलनुमा मकान है। सब कुछ उसी तरह का है।

भीतिहरवा पाठशाला में 80 लड़कों के साथ पहली बार पढ़ाई शुरू हुई। महाराष्ट्र के सदाशिव लक्ष्मण सोमन, गजराज के बालकृष्ण योगेश्वर, कस्तूरबा गांधी और डॉ0 शंकर रावदेव ने भी शिक्षक के रूप में काम किया। पं0 राजकुमार शुक्ल के नेतृत्व में संत राउत और प्रहलाद भगत भी पाठशाला के संचालन में सहयोग करते रहे। 1948 ई0 में इस पाठशाला को भीतिहरवा आश्रम से अलग कर दिया गया।

यहां प्रदर्शनी के रूप में म्यूजियम बनाया गया है। जो लोग यहां पर गांधी जी के बारे में जानना चाहते हैं या पढ़ना जाहते हैं उनके लिए यहां पर बहुत सारी किताबें लाई गयी हैं, जहां लोग बैठकर रिसर्च करते हैं, पढ़ते हैं। यहां लगभग 1000 से ज्यादा पुस्तकें हैं।

महात्मा गांधी और कस्तूरबा ने चम्पारण में शिक्षा, सफाई, आम सुधार तथा जनचेतना जगाने का कार्य किया। उन्होंने शिक्षा एवं सफाई पर विशेष ध्यान दिया। सफाई एवं सत्य–अहिंसा गांधी जी के जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग था। अतः गांधी जी के मूलमंत्र शिक्षा, सफाई, सत्य एवं अहिंसा को आज के जीवन का प्रमुख अंग बनाने की आवश्यकता है। जब 1904 में गांधी जी पहली बार कलकत्ता कॉन्फ्रेन्स में गए तो वहां देखा कि टॉयलेट गन्दा है। उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा। हाथ में झाड़ू लेकर लगे साफ करने। गांधी जी जितने दिन ठहरे, वे टॉयलेट ही साफ करते रहे। इसलिए एक व्यक्ति रोल मॉडल हो सकता है, तो गांधी ही हो सकता है। महात्मा गांधी का विचार था कि चम्पारण की प्रजा के दुखों के कारणों में एक प्रधान कारण उनकी अविद्या है.... कि जब तक उनकी मानसिक उन्नति नहीं होगी, उनका उद्धार किसी बाहरी शक्ति द्वारा होना असंभव है। गांधी जी ने ये भी कहा था कि ''कोई भी तालीम किसी को सच्ची तरह से मिल नहीं सकती है, जब तक उसकी जड़ सत्य और अहिंसा में न हो और सच्ची विद्या तो ये है, संस्कृत में कहा गया है कि विद्या उसका नाम है जिसको पढ़ने से और जिसके मुताबिक आचरण करने से आदमी को मुक्ति मिलती है।''

(सभी छायाचित्र –डॉ. किशोर सिन्हा)

❐

लोहिया जी की पुण्यतिथि (12 अक्टूबर) पर विशेष....

समाज सुधारक थें डॉ. राम मनोहर लोहिया

✍ अंकुर सिंह

23 मार्च, 1910 को डॉक्टर राम मनोहर लोहिया जी का जन्म अकबरपुर, फैजाबाद (उ. प्र.) जिले में हरिलाल एवं चंदा देवी के घर हुआ था और मृत्यु 12 अक्टूबर 1967 को नई दिल्ली के एक अस्पताल में हुआ था। जिसके बाद दिल्ली के उस हॉस्पिटल का नाम डॉक्टर राम मनोहर लोहिया हॉस्पिटल कर दिया गया।

डॉक्टर राम मनोहर लोहिया के पिता हरिलाल जी गांधी जी के परम भक्त थे और अपने साथ राममनोहर को भी गांधीवादी सभाओं में ले जाते थे। बचपन में ही लोहिया जी गांधी जी के विचारों से काफी प्रभावित होकर आजीवन गांधी जी की विचारधारा पर चलने का प्रण ले लिए।

1921 में डॉक्टर लोहिया पंडित नेहरू के संपर्क में आए और कुछ वर्षों तक उनके साथ कार्य किया। परन्तु, उन दोनों के बीच विभिन्न मुद्दों और सिद्धांतों को लेकर अक्सर आपसी टकराव और मतभेद दिखाई पड़ते थे। नेहरू जी के खर्चों के विरोध पर लोहिया जी का नारा एक आना बनाम तीन आना खूब प्रचलित था उस समय ।

लोहिया जी स्वतंत्रता सेनानी और राजनेता के साथ—साथ समाज सुधारक भी थे। उन्होंने नारी कल्याण के लिए और जातिवाद को समाज से दूर करने के लिए अनेक सामाजिक कार्यक्रम किए। अक्सर, अपने चुनावी और सामाजिक कार्यक्रमों में अपने सुनने वालों से सभा में हाथ उठावा कर कसम दिलाते थे कि कभी किसी नारी पर हाथ नहीं उठाओगे। इस पर एक मजेदार किस्सा भी है, एक बार एक लोहियावादी लोहिया जी के सभा से देर रात अपने घर पहुंचा और उसके घर पहुंचते ही उसकी पत्नी ने देर से आने की वजह से उसको काफी भला—बुरा कहा और बातों ही बातों में लोहिया जी की भी आलोचना करने लगी। काफी देर तक वह व्यक्ति सुनता रहा फिर अपनी पत्नी से बोला— आज, मेरे सामने तुम जो इतना बोल पा रही हो उसके पीछे भी लोहिया जी हैं क्योंकि उनकी सभा में मैंने कसम खाई है कि किसी भी महिला पर हाथ नहीं उठाऊंगा। इतना सुनते ही उस व्यक्ति की पत्नी चुप हो गई और अपने कहे शब्दों पर बहुत पछताई।

जातिवाद को समाज से दूर करने के उपाय पर लोहिया जी कहते थे कि अलग—अलग जातियों में रोटी और बेटी का रिश्ता होना चाहिए। अर्थात, विभिन्न जातियों में आपसी खान पान के साथ सामाजिक रिश्ते भी होना चाहिए जिससे उनके मन से आपसी भेदभाव और असमानता की भावना समाप्त हो सकें। वर्तमान परिस्थिति में, देश आजादी के इतने वर्षों बाद भी जातिवाद का दंश झेल रहा है जिसे लोहिया जी के रोटी और बेटी के रिश्ते वाले फॉर्मूले से काफी हद तक समाप्त किया जा सकता है।

लोहिया जी के अनुयायियों से यही कहना चाहूंगा कि लोहिया जी के आदर्शों पर चलने से देश की कई समस्याएं स्वतः समाप्त हो जाएँगी जो कि लोहिया जी के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ❒

अमेरिका में सबसे ऊंची हनुमान प्रतिमा का अनावरण

अमेरिका के टेक्सास राज्य के ह्यूस्टन शहर में स्थित अष्टलक्ष्मी मंदिर के कैंपस में हनुमान जी की 90 फिट ऊंची प्रतिमा का अनावरण हुआ।

स्टैच्यू ऑफ यूनियन के नाम से प्रसिद्ध यह प्रतिमा अमेरिका की तीसरी सबसे ऊंची प्रतिमा है।

श्री राम और माता सीता को फिर से मिलाने में हनुमान जी की भूमिका को देखते हुए अगस्त 2024 में स्थापित इस प्रतिमा को 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' का नाम दिया गया है।

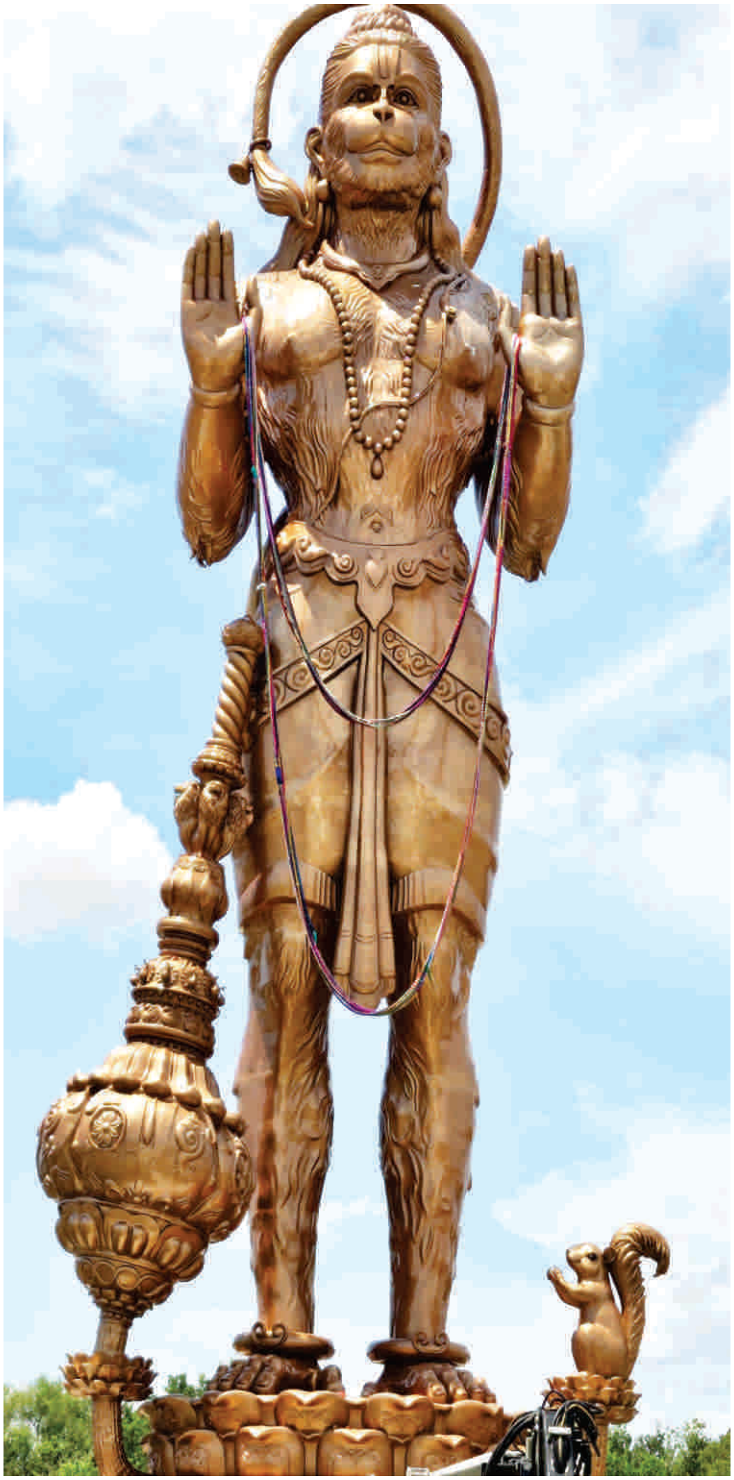

फिल्मी सितारों की यादगार दिवाली

मुंबई ब्यूरो, हर किसी के जेहन में दिवाली की कोई ना कोई यादगार स्मृतियां जरूर जुड़ी हुई होती हैं जो ताउम्र याद आती हैं। बोलो जिंदगी यहां साझा कर रहा है हिन्दी सिनेमा और भोजपुरी सिनेमा से जुड़े कुछ अभिनेता अभिनेत्रियों के दिवाली से जुड़े यादगार संस्मरण....

दिवाली के दिन सिल्वर जुबली हुई थी मैंने प्यार किया।

भाग्यश्री (अभिनेत्री): वो दिवाली मुझे हर बार याद आती है जब मेरी पहली फिल्म मैंने प्यार किया प्रदर्शित हुई थी। शायद 1990–91 का वक्त था जब दिवाली के दिन ही मुझे यह खबर मिली कि मेरी फिल्म सिल्वर जुबली हुई है तो मेरी खुशी दुगनी हो गई और वो दिवाली मेरे लिए यादगार बन गई।

दिवाली बाद मेरा एलबम हिट हुआ था

मनोज तिवारी (भोजपुरी गायक–अभिनेता) : मुझे याद आता है कि मैं अपने गांव में दीपावली की शाम मंदिर दीया जलाने जाता था। पहली बार जब मैं दीया जलाने गया तब मुझे किसी ने बताया कि दीया जलाने से घर में समृद्धि बढ़ती है और तब से मैं हर साल दिवाली पर ऐसा करने लगा।

एक बार दीया जलाकर ईश्वर से प्रार्थना की मेरा दुख दूर करो। और उसी साल मेरा पहला म्यूजिक एलबम आ पाया जो हिट भी हुआ। मैं गांव के उन शुरुआती दिनों की दिवाली कभी भूल नहीं सकता।

दिवाली के दिन हादसा हो गया था

साधना सिंह (नदिया के पार फेम अभिनेत्री): दिवाली को लेकर हर एक की जिंदगी में कुछ अच्छी तो कुछ बुरी घटनाएं जुड़ी रहती हैं। एक दिवाली की ऐसी ही घटना है जब घर में पूजा पाठ के बाद मेरे पति पटाखा जला रहे थें। गलती से उनके हाथ में एक बम फट पड़ा और वे बेहोश हो गए, हाथ से खून बहने लगा। वे दिनभर व्रत रखे हुए थें और ये हादसा देखकर सभी गमगीन हो उठे। उन्हें तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया और मां लक्ष्मी की कृपा से अनहोनी होने से बच गई।

पड़ोसी लड़के मेरे सामने बम फोड़कर डराया करते थें

रानी चटर्जी (भोजपुरी फिल्म अभिनेत्री) : जब मैं 10 –11 साल की थी दिवाली की पूजा बाद स्कूल के साथियों एवं भाई बहनों के साथ पास के बगीचे में जाकर खेला करती और मिलजुलकर मिठाईयां खाती। तब मुझे बड़े बड़े बमों से काफी डर लगता था और इसी वजह से मेरे पड़ोस के लड़के मेरे गुजरते वक्त पटाखे जलाकर मुझे डराने की कोशिश में रहते। मैं चीखती चिल्लाती भाग खड़ी होती थी। आज भी बमों का डर इस कदर हावी है कि मैं सिर्फ रोशनी करनेवाली फुलझड़ियों से ही काम चला लेती हूं। ❐

भारतीय छात्र यूरोप में आईटी, फार्मा और फैशन पाठ्क्रम क्यों चुन रहे हैं?

✍ विजय गर्ग
शैक्षिक स्तंभकार, मलोट, पंजाब

भारतीय छात्र आईटी क्यों चुन रहे हैं? हाल के वर्षों में, भारतीय छात्रों ने वैश्विक रुझानों और अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन के वादे के अनुरूप पाठ्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला का चयन करते हुए यूरोपीय विश्वविद्यालयों में बढ़ती रुचि दिखाई है। जबकि सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और फार्मास्यूटिकल्स में पारंपरिक कार्यक्रम उत्कृष्ट कैरियर संभावनाओं के कारण लोकप्रिय बने हुए हैं, वहीं फैशन, ब्रांडिंग और विलासिता जैसे अपरंपरागत विषयों की ओर उल्लेखनीय बदलाव आया है। यह बदलाव पहली नजर में आश्चर्यजनक लग सकता है, लेकिन यह बड़ी संभावनाओं वाले विशिष्ट उद्योगों की तलाश कर रहे छात्रों द्वारा सोचा–समझा कदम है। उदाहरण के लिए, फैशन पावरहाउस कहे जाने वाले फ्रांस और इटली जैसे देशों में फैशन, ब्रांडिंग या लक्जरी में एमबीए करने से कई अवसरों के द्वार खुल सकते हैं। ये देश ढेर सारे घरेलू और लक्जरी ब्रांडों का घर हैं, जो उन्हें फैशन और लक्जरी उद्योगों में खुद को स्थापित करने का लक्ष्य रखने वाले छात्रों के लिए आदर्श स्थान बनाते हैं। इन रास्तों को चुनकर, छात्र अत्यधिक प्रतिस्पर्धी और विशिष्ट क्षेत्रों में सफल होने के लिए रणनीतिक रूप से खुद को तैयार कर रहे हैं। इन विशिष्ट पाठ्यक्रमों के अलावा, भारतीय छात्र औद्योगिक इंजीनियरिंग जैसे उन्नत, उद्योग–विशिष्ट कार्यक्रमों और उद्योग 4.0 से जुड़े क्षेत्रों की ओर भी आकर्षित हो रहे हैं। जैसे–जैसे यूरोप तकनीकी प्रगति और औद्योगिक नवाचार को अपनाता है, ये पाठ्यक्रम उभरते वैश्विक बाजार में सफलता का मार्ग प्रदान करते हैं। एक दीर्घकालिक बदलाव हालाँकि यूरोपीय विश्वविद्यालयों के प्रति यह रुझान हालिया विकास जैसा लग सकता है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में यह धीरे–धीरे गति पकड़ रहा है। आईसीईएफ मॉनिटर के 2022 के एक अध्ययन के अनुसार, यूके, जर्मनी और फ्रांस जैसे देशों ने बड़ी संख्या में छात्रों को आकर्षित किया, खासकर भारत और चीन से। आंकड़ों से पता चला कि अकेले उस वर्ष इन क्षेत्रों से कुल 210,000 छात्र नामांकित हुए थे। इस स्थिर वृद्धि का एक कारण यूरोपीय देशों द्वारा अपनाया गया सक्रिय रुख है। उदाहरण के लिए, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन ने 2030 तक फ्रांस में 30,000 छात्रों की मेजबानी करने के एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य की घोषणा की, जो अधिक अंतरराष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने के स्पष्ट इरादे का संकेत देता है। हालाँकि हर यूरोपीय देश ऐसी साहसिक घोषणाएँ नहीं कर सकता है, लेकिन उनकी नीतियाँ भारत सहित विदेशी छात्रों के प्रति एक स्वागत

योग्य रवैया दर्शाती हैं। यूरोप में अध्ययन करने की योजना बना रहे भारतीय छात्रों के लिए, आवास और वीजा प्रक्रिया जैसी व्यावहारिक चिंताएँ अक्सर दिमाग में सबसे ऊपर होती हैं। हालाँकि, कई संस्थाएँ और संगठन संक्रमण को आसान बनाने के लिए व्यापक समर्थन प्रदान करते हैं। ऐसे समर्पित मंच हैं जो विश्वसनीय और सुविधाजनक छात्र आवास सेवाएं प्रदान करते हैं। अधिकांश यूरोपीय विश्वविद्यालय किफायती दरों पर परिसर में शयनगृह भी प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, छात्र उन साथी भारतीयों के व्यापक नेटवर्क से लाभ उठा सकते हैं जो मार्गदर्शन और समर्थन की पेशकश करते हुए पहले ही यह कदम उठा चुके हैं। जब वीजा की बात आती है, तो विश्वविद्यालयों और शिक्षा सलाहकारों के पास अक्सर इन–हाउस विशेषज्ञ होते हैं जो प्रक्रिया के माध्यम से छात्रों का मार्गदर्शन करते हैं। ये विशेषज्ञ आवश्यक फाइलें बनाने में मदद करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि वीजा आवेदन समय पर और कुशल तरीके से पूरे हो जाएं, जिससे छात्रों के लिए विदेश में अपनी पढ़ाई शुरू करने का रास्ता आसान हो जाए। एसओपी और अध्ययन के बाद के अवसरों को नेविगेट करना यूरोपीय विश्वविद्यालयों में अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए आवश्यकताएँ अलग–अलग हैं। आम तौर पर, छात्रों को कुछ विश्वविद्यालयों में अपनी शैक्षणिक और भाषा दक्षता प्रदर्शित करनी होती हैआईईएलटीएस बैंड स्कोर की आवश्यकता होती है जबकि अन्य को नहीं। ये मानक संचालन प्रक्रियाएं (एसओपी) यूरोप में कठोर शैक्षणिक माहौल के लिए एक छात्र की तैयारी का आकलन करने के लिए डिजाइन की गई हैं। एक बार जब छात्र अपनी पढ़ाई पूरी कर लेते हैं, तो नौकरी की संभावनाएं आशाजनक होती हैं। मजबूत तकनीकी कौशल और वैश्विक मानसिकता से लैस भारतीय छात्र अक्सर खुद को यूरोप भर की प्रतिष्ठित कंपनियों में पाते हैं। वास्तव में, कई लोग न केवल शिक्षा की गुणवत्ता के लिए बल्कि कार्य–जीवन संतुलन और आकर्षक वेतन के लिए भी यूरोप की ओर आकर्षित होते हैं। यूरोपीय कार्य संस्कृति व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के बीच एक स्वस्थ संतुलन को बढ़ावा देने के लिए प्रसिद्ध है, जो समग्र कैरियर अनुभव चाहने वाले छात्रों के लिए आकर्षण बढ़ाती है। भारतीयों के लिए यूरोपीय शिक्षा में भविष्य के रुझान आगे देखते हुए, भारतीय छात्रों का यूरोपीय विश्वविद्यालयों को चुनने का रुझान जारी रहने की उम्मीद है। अनुकूल नीतियों का संयोजन और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा की इच्छा संभवतः अधिक छात्रों को यूरोप की ओर ले जाएगी। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि हालाँकि यूरोपीय देश अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने के लिए उत्सुक हैं, लेकिन उनकी अर्थव्यवस्थाएँ इस आमद पर निर्भर नहीं हैं। कुछ अन्य क्षेत्रों के विपरीत, यूरोप में केवल आर्थिक कारणों से अंतरराष्ट्रीय नामांकन में वृद्धि का अनुभव होने की संभावना नहीं है। इसके बजाय, यूरोपीय विश्वविद्यालयों की प्रतिष्ठा और उनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले विविध अवसरों के कारण भारतीय छात्रों के बीच यूरोपीय शिक्षा की मांग लगातार बढ़ेगी। फैशन, आईटी या उन्नत इंजीनियरिंग जैसे विशिष्ट उद्योगों में अपनी पहचान बनाने के इच्छुक छात्रों के लिए, यूरोप एक अद्वितीय और मूल्यवान शैक्षिक परिदृश्य प्रस्तुत करता है। जैसे–जैसे अधिक भारतीय छात्र पारंपरिक शैक्षिक स्थलों से परे दिखते हैं, यूरोपीय विश्वविद्यालय विश्व स्तरीय शिक्षा को वैश्विक कैरियर के अवसरों के साथ जोड़ने का लक्ष्य रखने वालों के लिए शीर्ष विकल्प के रूप में उभर रहे हैं। चाहे वह पेरिस में फैशन हो, जर्मनी में औद्योगिक इंजीनियरिंग हो, या यूके में आईटी हो, यूरोप नए क्षितिज तलाशने के लिए तैयार महत्वाकांक्षी भारतीय छात्रों के लिए ढेर सारे अवसर प्रदान करता है। ❐

दोस्त और किताबें

✍ देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
बस्ती, उत्तर प्रदेश

तीन गहरे मित्र थे । एक के पिता कवि थे, दूसरे के पिता खानदानी अमीर थे, तीसरे के पिता माफिया थे। पहले को अपने कवि पिता से विरासत में कई आलमारियां भरी किताबें मिली। दूसरे को ढेर सारी दौलत मिली। तीसरे को गोली, बारूद और बंदूक। दौलत और गोली बारूद वाले दोस्त किताब वाले दोस्त की खूब हँसी उड़ाते थे...।

दौलत वाला जीवन खूब मजे से व्यतीत कर रहा था, ऐशो आराम का लुफ्त उठा रहा था। दूसरा दोस्त भी माफियागिरी करने लगा, बदमाशी और गुंडागर्दी में रमने लगा। तीसरा बेचारा क्या करे, किताबों का उसका मुफलिसी में जीवन गुजरने लगा।

काम की तलाश करता था, मारा–मारा फिरता था। एक दिन खाली बैठा अपने पिता की लिखी किताबों को उलट पलट कर देखने लगा। कुछ अच्छा लगा तो पढ़ने लगा, उसे पढ़ना अच्छा लगने लगा।

पिता की कई किताबें पढ़कर उसे लगा कि किताबें तो वाकई ज्ञान का भंडार हैं। पिता का दिया हुआ अनमोल उपहार है। शब्दों की शक्ति उसे पता चली और फिर वह कानून की पढ़ाई करने लगा। खूब मन लगाकर उसने कानून की किताबें पढ़ी। वकालत पास करके शहर का जाना माना वकील हो गया।

उसे अपने काम से धन–दौलत की बरसात होने लगी। जीवन खुशियों में कटने लगा। एक दिन कोर्ट में उसके सामने कटघरे में हथकड़ी पहने उसका माफिया दोस्त खड़ा था,जो उसे पहचान नहीं रहा था। उससे बचाने की अपील कर रहा था। इस शर्त पर कि अब कभी गुंडागर्दी नहीं करेगा।

वकील दोस्त ने कानूनी दावपेंच से उसे बचा लिया। और एक दिन जब घर के बरामदे में टहल रहा था उसका दौलत वाला दोस्त हाथ जोड़कर कुछ काम माँग रहा था। शायद उसकी दौलत ऐशो–आराम में उड़ चुकी थी। ये भी अपने दोस्त को पहचान नहीं पा रहा था।

दोस्ती के नाते उसे अपने ऑफिस में लिखने–पढ़ने का काम दे दिया। कुछ दिनों बाद उन दोनों दोस्तों को किताबों वाले दोस्त के बारे में पता चला जो बड़ा वकील बन गया था।

एक तो पास ही था, दूसरा भी उसे खोजते हुए आया। तीनों मिले, वो दोनों खूब शर्मिंदा हुए।

इस तरह दौलत और गोला बारूद आज किताबों की शक्ति के आगे हार गये।

सच में यदि पास में ढेरों किताबें हैं वही सच्चे मित्र हैं, वही असली गुरु हैं। किताबें ही दौलत हैं,ताकत हैं। किताबों वाला शख्स सबसे सुखी और अमीर है। किताबों में कविता है, कहानियाँ हैं, इतिहास, भूगोल और विज्ञान है। किताबों में दुनिया का ज्ञान है..। ❐

कविता

कुछ चुप्पियां..बेहद गहरी होती हैं

✍ अम्बिका कुमारी कुशवाहा
पटना (बिहार)

कुछ चुप्पियां..
बेहद गहरी होती हैं।
जो नही झांकती
खिड़कियों और दरवाजों से
बीतते वक्त की
धूमिल होती रोशनी में
तलाशती है वजूद
कुछ चुप्पियां।

टूटते वादों की
बिखरते उम्मीदों के
एकांत बंद कमरे में
घुटन महसूस करती
अपनी परछाई से भी
बोलते घबराती हैं
कुछ चुप्पियां....।

कुछ चुप्पियां..
बहुत गहरी होती है।
खामोश आंखों की
असीम पीड़ाओं से
हृदय तल को छूते
चुभते कांटों से भी
कुछ आत्माएं चुप रहा करती हैं।

कुछ चुप्पियां..
चाहती नही एकांत में
भी चीखना।
कुछ चुप्पियां
बेहद गहरी होती हैं। ❐

हिम्मत की सहेली आशा

✍ डॉ. कुमकुम वेदसेन
मनोविश्लेषक, नवी मुंबई
संपर्क: 8355897893
ईमेल : k.vedasen@gmail.com

पूर्व लेख का समापन हिम्मत शब्द पर हुई थी। उसने दिए जलाकर हौसले को बढ़ा दिया, इस हौसले को लेकर हिम्मत आशा से जा मिली और उदास निराश मन में आशा की किरण का एहसास करा दिया।

मन जो उलझन में उलझ कर अशांत रहने लगा है उसे हिम्मत ने यह भरोसा दिया कि मन तो चंचल है, यह कभी एक जगह स्थिरता से टिकता नहीं हैं, चंचल तन, बुद्धि और सोच को बदलकर अशांति के पास पहुंच जाता है और घरेलू वातावरण में उथल–पुथल मचाता रहता है। अब इस उथल–पुथल की अवस्था को संतुलित करने के लिए हमें कहीं ना कहीं से मन को ही नियंत्रित करना होगा, कहना बहुत आसान है पर करना उतना ही कठिन है पर कोई भी काम संभव नहीं है अगर नियमित व्यवहारों और सोच में बदलाव लाया जाए तो मन को भी नियंत्रित किया जा सकता है। स्वयं के जीवन शैली, सोच विचार और इच्छाओं को मर्यादा में रखकर मन पर नियंत्रित करना है तभी तो अशांति कमजोर बन सकेगी, हमारे जीवन में आना ही भूल जाएगी। यह सब परिपक्वता के नियम हैं। लिखने का मुख्य उद्देश्य है बेचैन हृदय पर काबू पा लेना।

तीन चार ऐसे कारक हैं जो अक्सर जीवन में आते रहते हैं जिसमें भाषा और भाषा शैली प्रमुख है, शब्दों के चयन और अभिव्यक्ति के लिए भाषा शैली प्रमुख है, दूसरी बात यह है कि भाषाओं की अभिव्यक्ति के स्टाइल में मधुरता लानी होगी। परामर्श का सहारा रहे तो शायद अशांति कम होगी, सामान्य तौर पर भाषा चार प्रकार से घरों में बोली जाती है। नंबर वन व्यंग्यात्मक भाषा, नंबर 2 नकारात्मक भाषा, नंबर 3 सकारात्मक भाषा, नंबर 4 सुझावात्मक भाषा। इन चार प्रकार की भाषाओं की शैली हर घर के वातावरण की एक कसौटी है जहां तक यह देखा गया है कि नकारात्मक शैली का उपयोग घरों में अधिक किए जाते हैं, यही कारण है कि बिना किसी वजह से मन अशांत हो जाता है, मन की शांति भंग हो जाती है और मन बेचैन लगने लगता है। मन तो मन ही है, कभी हंसता है कभी रोता है, कभी उछलता है तो कभी निराश होकर उदास भी रहने लगता है।

मन को स्थिर और शांत करने के लिए अपनी इच्छाओं को संयमित करना श्रेष्ठकर है, भाषाओं की अभिव्यक्ति में मधुरता रूपी चासनी की मिठास लानी होगी। जो मिला नहीं उसे आपको मिलना ही नहीं था, बेवजह हम उम्मीद लगाए हुए थे। विचारों की प्रणाली में सहजता और सरलता रखनी पड़ेगी। हरिवंश राय बच्चन की कविता की दो लाइन याद रखें, जिसकी जितनी चाहत थी उतनी ही पहचाना मुझे, बस साहित्य का दामन थामकर खुद को स्थिति की मांग के अनुसार बदलते रहें, अशांत मन में आशा की किरण जलाते रहें।

एक ऐसा शब्द है जिसे हम लोग, सभी कोई इगो कहते हैं, जो मन में तकरार पैदा करता है और अधिकतर वातावरण में जहर घोलता रहता है। वातावरण के मिठास को कम करने में सबसे आगे रहता है। अपने इस ईगो को मस्का चस्का लगाकर परिवर्तनशील बनाने से अशांति को जीवन से दूर निकालने में हम सक्षम हो सकेंगें।

अब अगले अंक में...। ❐

धैर्य और पराक्रम का स्वामी मंगल

✍ उमेश उपाध्याय
आध्यात्मिक एवं ज्योतिष विशेषज्ञ
संपर्क: 9709378488

धैर्य ,पराक्रम और साहस का प्रतीक मंगल एक ऊर्जावान ग्रह है। शक्ति ,भूसंपत्ति ,कृषि, भ्राता, अग्नि, सेनापति का कारक ग्रह मंगल है। मंगल व्यक्ति को पुरुषार्थ और सक्रिय बनाकर उनका कायाकल्प करता है। यह मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी है। यह एक राशि में लगभग डेढ़ माह तक रहता है।

मंगल मकर के 28 अंश पर परम उच्च और कर्क के 28 अंश पर परम नीच होता है। मंगल का मेष में 18 अंश तक मूल त्रिकोण और उसके आगे स्वक्षेत्री है।

मान लें कि किसी का मंगल मेष के 14 अंश पर है तो वह मंगल मूल त्रिकोण में कहा जाएगा परंतु मंगल मेष के 18 और उससे ऊपर यानी 19 या 20 अंश पर रहने से केवल स्वक्षेत्री कहलाएगा।

मंगल आकृति में ड्रम के समान गोलाकार, बेलनाकार, उग्र, उष्ण, पुरुष लिंग, क्षत्रिय वर्ण, अग्नि तत्व, तमोगुण, दक्षिण दिशा का स्वामी, लंबाई में छोटा, लाल, रंग का एक पाप ग्रह है। 28 से 32 वर्ष की अवस्था में अपनी महादशा, अंतर्दशा में व्यक्ति के भाग्य को उठाता है। उन्नति एवं प्रगति के पथ पर लाता है। सूर्य, चंद्र और गुरु उनके मित्र ग्रह हैं। मंगलवार इनका अपना वार है। मंगल मज्जा (हड्डी के अंदर की गुद्दा) का स्वामी और पित्त कारक है । मंगल जन्म कुंडली के 3,6, 10, 11 भाव में होने पर व्यक्ति को अच्छा फल देता है । कुंडली के द्वादश, लग्न चतुर्थ, सप्तम और अष्टम भाव में मंगल का होना मांगलिक दोष उत्पन्न करता है। शुभ भावस्थ व शुभ राशिस्थ भाव में मंगल व्यक्ति को जेलर, डॉक्टर, इंजीनियर, पुलिसिया, फौजी अफसर , रिसर्चर आदि बनाता है। निर्बल, दूषित ,अस्त एवं नीच मंगल व्यक्ति के जीवन में संघर्ष लाता है।

मंगल का भाव स्थिति के अनुसार फल
प्रथम भाव यानि लग्न में मंगल के होने से जातक क्रूर, साहसी, महत्वाकांक्षी और शक्तिशाली होता है तथा मांगलिक योग भी बनाता है।

द्वितीय भाव में मंगल बली होने पर व्यक्ति को विद्वान, गुणवान बनाता है और परिवार में प्रतिष्ठित करता है। निर्बल मंगल कटु भाषी निर्बुद्धि ,कलहप्रिय बनाता है।

तृतीय भाव में मंगल के होने से व्यक्ति प्रसिद्ध, शूरवीर, धैर्यवान, शक्तिशाली ,सर्वगुण, बलवान , प्रबल जठराग्नि वाला ,अति कष्ट कारक एवं कटु भाषी होता है।

चतुर्थ भाव में मंगल के होने से भी मांगलिक योग बनता है। व्यक्ति के पास भौतिक सुख सुविधा, जमीन, मकान, वाहन आदि होता है फिर भी व्यक्ति व्यथित रहता है।

पंचम भावस्थ मंगल व्यक्ति को बुद्धिमान, विद्वान, पराक्रमी, उग्र बुद्धि, खिलाड़ी, डॉक्टर आदि बनाता है किंतु उदर रोगी भी होता है।

मंगल यदि छठे भाव में हो तो प्रबल जठराग्नि, बलवान, धैर्यशाली, कुलवंत, प्रचंड शक्ति, शत्रुहन्ता, पुलिस पदाधिकारी बनाता है। राजनीति में भी लाता है।

सप्तम भावस्थ मंगल मांगलिक योग बनाता है। व्यक्ति दांपत्य जीवन से दुखी, वात रोगी, राजभीरू, शीघ्र क्रोधी बनाता है।

अष्टम भावस्थ मंगल भी मांगलिक योग बनाता है। व्यक्ति को दीर्घायु बनाता है। मंगल के आठवें भाव में होने से व्यसनी, कठोर भाषी, अग्नि भीरू, संकोची एवं धन चिंता युक्त बनाता है।

नवम भाव का मंगल व्यक्ति को क्रोधी, अहंकारी, ईर्ष्यालु किंतु शिक्षित और साहसी बनाता है। तकनीकी विषयों का ज्ञाता, अधिकारी व राजनेता बनाता है।

दसवें भाव का मंगल व्यक्ति को धनवान, कुल दीपक, सुखी, यशस्वी उत्तम वाहनों से सुखी, स्वाभिमानी एवं माता–पिता का नाम रौशन करता है।

एकादश भाव का मंगल व्यक्ति को सुखी, श्रेष्ठ, कार्य कुशल, गुणवान, धनवान, न्यायवान एवं धैर्यवान बनाता है।

12वें भाव का मंगल भी मांगलिक योग बनाता है। व्यक्ति को नेत्र रोगी, उग्र ,ऋणी, मूर्ख एवं चिंतायुक्त बनाता है।

मंगल के अशुभ होने पर उनके शांति हेतु उपाय
(1) जातक को प्रतिदिन हनुमान जी का दर्शन मंदिर में जाकर करना चाहिए,
(2) मंगलवार को उपवास रखें,
(3) हनुमान जी को मंगलवार को सिंदूर चढ़ाएं,
(4) भाई की सेवा करें,
(5) प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

❒

व्रत के लिए टिक्की दही चाट

✍ **किरण उपाध्याय**
रेसिपी एक्सपर्ट

व्रत के लिए हम टिक्की दही चाट बनाएंगे जो की बहुत ही स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक होता है।

सामग्रियां:—

आलू (6 मध्यम आकर के) ,केला(3), दही आवश्यकता अनुसार, हल्दी आधा चम्मच, घी या रिफाइंड तलने या सेंकने के लिए, अरारोट या सिंघाड़े का आटा या कुट्टू का आटा आधा कटोरी, सेंधा नमक स्वाद अनुसार ,भुना हुआ जीरा पाउडर ,भुना हुआ धनिया पाउडर ,काली मिर्च पाउडर, अदरक।

गार्निशिंग के लिए:—

बारीक कटी हुई हरी मिर्च, बारीक कटा हुआ धनिया पत्ती,बारीक कटा हुआ खीरा, अनार के दाने ,कद्दूकस किया हुआ गाजर, कद्दूकस किया हुआ मूली, भुना हुआ मूंगफली।

बनाने की विधि—

सबसे पहले हम कुकर में करीब आधा इंच तक पानी ले लेंगे फिर आलू और फिर उसके ऊपर केला डालकर कुकर में दो सिटी लगवा लेंगे। कुकर में ज्यादा पानी डालने से आलू और केला पानी शोख लेगा, जिससे उसका स्वाद खराब हो जाएगा।

अब हम उबले हुए केला और आलू को छीलकर दरदरा मैश कर लेंगे। अब हम इसमें बारीक काटा हुआ धनिया पत्ती, हरी मिर्च ,आधा चम्मच घिसा हुआ अदरक, नमक स्वाद अनुसार, आधा चम्मच भुना हुआ जीरा पाउडर और आधा चम्मच भुना हुआ धनिया पाउडर डालकर सभी सामग्रियों को मिला लेंगे, आप चाहे तो भुना हुआ मूंगफली को दरदरा पीसकर भी मिला सकते हैं। अब हम टिक्कियां बनाकर रख लेंगे। अब हम एक बर्तन में आधा कटोरी अरारोट या सिंघाड़े का आटा का एक गाढ़ा घोल तैयार कर लेंगे। घोल में हम स्वाद अनुसार नमक और आधा चम्मच हल्दी मिला लेंगे। अब हम टिक्कियों को घोल में डुबाकर मध्यम आंच पर सुनहरा होने तक सेंक लेंगे या तल लेंगे।

टिक्कियों को परोसते समय सबसे पहले हम प्लेट में टिक्कियों को डालेंगे उसके ऊपर से हम फेंटा हुआ दही डालेंगे, ऊपर से स्वाद अनुसार नमक आधा, चम्मच भुना हुआ जीरा पाउडर, आधा चम्मच भुना हुआ धनियां पाउडर , काली मिर्च पाउडर, स्वाद अनुसार, बारीक कटी हरी मिर्च, कद्दूकस किया हुआ गाजर, कद्दूकस किया हुआ मूली, अनार के दाने ,भुना हुआ मूंगफली डालकर फिर ऊपर से चुटकी भर नमक, एक चुटकी भुना हुआ जीरा पाउडर, भुना हुआ धनियां पाउडर, काली मिर्च पाउडर डालेंगे और टिक्की दही चाट का आनंद लेंगे। ❐

प्रॉपराइटरशिप फर्म बनाकर आप भी शुरू कर सकते हैं अपना बिजनेस

✍निशांत कुमार प्रधान
इंटरनल ऑडिटर,
लेबर लॉ एडवाइजर एवं टैक्स प्रैक्टिशनर्स
संपर्क: 8210366618
ईमेल : neeaan7@gmail-com

प्रॉपराइटरशिप आपको उद्यमी बनाता है और बिजनेस खड़ा करने के लिए कानूनी अनुपालनों का झंझट भी नहीं होता। 40 लाख रुपए तक के सालाना कारोबार पर आपको टैक्स भी नहीं चुकाना पड़ेगा। यदि आप नौकरी के बंधन में रहना पसंद नहीं करते हैं तो प्रॉपराइटरशिप आपके लिए शानदार विकल्प हो सकता है। इसके तहत आप आम जरूरत के सामान का स्टोर खोल सकते हैं, टी स्टॉल शुरू कर सकते हैं या फिर कोई छोटी-मोटी फैक्टरी भी खोल सकते हैं।

प्रॉपराइटरशिप फर्म शुरू करने के लिए मोटे तौर पर सिर्फ दो दस्तावेजों की जरूरत पड़ती है- एड्रेस प्रूफ और आईडी प्रूफ। आप सिर्फ आधार कार्ड या वोटर आईडी कार्ड और रेंट एग्रीमेंट के साथ बिजली बिल लगाकर नगर निगम से लाइसेंस ले सकते हैं और गुमास्ता पंजीकरण करा सकते हैं। कुछ राज्यों में नगर निगम के पास दुकान या फर्म का फोटो भी जमा कराना पड़ता है।

प्रॉपराइटरशिप शुरू करने के चार चरण

एंटीटी का नाम रखें- बिजनेस एंटीटी के नाम पर ही उसका रजिस्ट्रेशन होगा। किसी अन्य एंटीटी से मिलते-जुलते नाम पर भी आप बिजनेस शुरू कर सकते हैं।

जगह तय करें- नाम की तरह प्रॉपराइटरशिप फर्म के तहत शुरू किए जा रहे बिजनेस की जगह भी तय होनी चाहिए। पते के बिना रजिस्ट्रेशन नहीं हो पाएगा। रेंट पर ले रहे हैं तो एनओसी भी ले लें।

पूंजी जुटाएं- हर बिजनेस के लिए पूंजी की जरूरत होती है। यदि पूंजी नहीं है तो आप प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत बैंक से रियायती दरों पर लोन ले सकते हैं।

कानूनी औपचारिकता नगर निगम से प्रॉपराइटरशिप के तहत खोले गए फर्म का लाइसेंस लें और गुमास्ता पंजीकरण कराएं। पैन न हो तो यह भी बनवा लें। इन दो दस्तावेजों से आपका काम हो जाएगा।

प्रॉपराइटरशिप के तीन बड़े फायदे

नियमों का न्यूनतम बंधन-प्रॉपराइटरशिप में नियम-कायदों का ध्यान रखने की कम जरूरत होती है। चूंकि बिजनेस के संचालक और मालिक आप खुद होते हैं, लिहाजा ज्यादातर जिम्मेदारियां खुद के प्रति होती है। इसमें नियामकों का दखल न के बराबर होता है।

बिजनेस पर पूरा कंट्रोल- प्रॉपराइटरशिप पर आपका पूरा नियंत्रण बना रहता है। फैसले करने की पूरी आजादी होती है। इसमें किसी और की भागीदारी नहीं होने के चलते बिजनेस की लागत, मार्जिन, रणनीति और अन्य संवेदनशील चीजों को लेकर पूरी तरह गोपनीयता बनी रहती है।

अलग से रिटर्न फाइल नहीं करना होता- प्रॉपराइटरशिप फर्म के लिए अलग से इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने की जरूरत नहीं होती है। यदि मालिक के ऊपर रिटर्न भरने का दायित्व आता है तो प्रोप्राइटर के इनकम टैक्स रिटर्न में ही प्रोपइटरशिप फर्म के आय-व्यय का ब्योरा चला जाता है।

प्रॉपराइटरशिप क्या है? प्रॉपराइटरशिप गैर-पंजीकृत बिजनेस का एक मॉडल है, जिसका मालिक एक व्यक्ति होता है और वो ही उसे संभालता भी है। देश में असंगठित क्षेत्र के अधिकांश उद्यमी अपना बिजनेस प्रॉपराइटरशिप के तौर पर रजिस्टर करवाना पसंद करते हैं। दरसअल, इसके तहत बिजनेस करने के लिए बहुत कम नियामकीय अनुपालनों की जरूरत होती है। ऐसे उद्यमियों का दायित्व सीमित होता है।

40 लाख तक जीएसटी मुक्त प्रॉपराइटरशिप के तहत कोई रिकॉर्ड मेंटेन नहीं करना पड़ता है। यदि सालाना कारोबार 40 लाख रुपए से कम हो तो जीएसटी की भी जरूरत नहीं है। सालाना टर्नओवर यदि 40 लाख से ज्यादा और 2 करोड़ रुपए से कम हो तो यह जीएसटी के दायरे में तो आएगा, लेकिन आम तौर पर टैन (टैक्स डिडक्शन अकाउंट नंबर) की जरूरत नहीं पड़ेगी। यानि बिजनेस ऑडिट फ्री रहेगा। ❒

सांसद अरुण गोविल ने मनोरंजन उद्योग से जुड़े कलाकारों और कामगारों की समस्याओं को लोकसभा में उठाने का दिया भरोसा

मुंबई ब्यूरो, सिनेमा और मनोरंजन जगत के बहुत से कलाकार नाम और शोहरत पाकर लोकसभा चुनाव लड़ते हैं और जीतकर सांसद तथा कभी मंत्री तक बन जाते हैं, लेकिन सिनेमाजगत के कलाकारों और कामगारों की समस्यायों पर कभी ध्यान नहीं देते। मगर फिल्म इंडस्ट्री के राम यानी अरुण गोविल ने मेरठ हापुड़ से सांसद बनने के बाद स्वतः संज्ञान लेते हुये फिल्म इंडस्ट्री के कलाकारों और कामगारों को अपना समर्थन देने की पेशकश की है। अरुण गोविल ने फेडरेशन ऑफ वेस्टर्न इंडिया सिने एम्प्लॉइज (एफडब्लूआईसीई)के सदस्यों से मुलाकात की। इन पदाधिकारियों ने मांगों का पत्र सांसद अरुण गोविल को सौंपा। इस बैठक में एफडब्लूआईसीई के प्रेसिडेंट बीएन तिवारी, जनरल सेकरेट्री अशोक दूबे,फिल्म स्टूडियो एलाइड मजदूर यूनियन के कोषाध्यक्ष राकेश मौर्या आदि भी शामिल थे। श्री तिवारी ने कहा, "अरुण गोविल पहले लोकसभा सदस्य हैं जो हमारे पास पहुंचे और हमारे मुद्दों को संसद में उठाने की पेशकश की। उन्होंने हमें मुंबई के यारी रोड स्थित अपने घर पर मंगलवार को बुलाया, और हम अपनी सभी मांगों के साथ गए, जिसे उन्होंने सुना और हल करने का वादा किया है।

जब एफडब्ल्यूआईसीई के पदाधिकारियों से सांसद अरुण गोविल के साथ उठाई गई मांगों के बारे में पूछा गया, तो बीएन तिवारी ने कहा, "हमने एक दिन में कामगारों के लिए आठ घंटे की शिफ्ट करने के लिए कहा है, जिसके बाद श्रमिकों को डबल शिफ्ट के लिए भुगतान किया जाना चाहिए। हमने रविवार को एक अनिवार्य छुट्टी का भी अनुरोध किया ताकि हमारे सदस्य अपने परिवारों के साथ समय बिता सकें, क्योंकि उनमें से अधिकांश वर्तमान में अनियमित कामकाजी घंटों के कारण अत्यधिक काम कर रहे हैं। काम के घंटे और भुगतान के अलावा, एक और बिंदु जिस पर तिवारी ने प्रकाश डाला वह सिनेमा में महिलाओं के लिए काम करने की स्थिति थी। उन्होंने कहा, "हमने इसे बड़े पैमाने पर जोर दिया है कि अगर महिलाएं और बच्चे रात में फिल्म और टेलीविजन सेट पर शूटिंग कर रहे हैं, तो उन्हें घर तक छोड़ दिया जाना चाहिए, और यह प्रोडक्शन हाउस की जिम्मेदारी होगी। साथ ही, महिलाओं के लिए चेंजिंग रूम, स्वास्थ्य, स्वच्छता और सेट पर सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस बैठक में एफडब्लूआइसी के जनरल सेक्रेट्री अशोक दूबे ने सांसद अरुण गोविल से कहा कि निर्माताओं और सरकार के बीच एक त्रिपक्षीय समझौता बनाने की जरूरत है और सिनेमा जगत को इंडस्ट्रीज का दर्जा दिया जाए और इसमें कार्यरत कामगारों को पीएफ तथा ईएसआई आदि की भी सुविधा मिले। अरुण गोविल ने इसे लोकसभा में उठाने का वादा किया है। तिवारी ने कहा, हम इस बात से अभिभूत हैं कि हमारे अपने राम यानि अरुण गोविल हमारे पास आए और उद्योग के लाभ के लिए अच्छा काम करना चाहते हैं। ❒

आयुषमति गीता मैट्रिक पास का ट्रेलर अब रिलीज : दृढ़ संकल्प की एक प्रेरक कहानी

पुणे, 28 सितंबर 2024 आगामी पारिवारिक ड्रामा, आयुषमति गीता मैट्रिक पास का बहुप्रतीक्षित ट्रेलर 28 सितंबर को डीवाई पाटिल कॉलेज, पिंपरी–चिंचवाड़, पुणे में एक भव्य कार्यक्रम में अनावरण किया गया, जिसमें फिल्म के कलाकारों और क्रू के साथ–साथ सुपर 30 के संस्थापक आनंद कुमार भी शामिल हुए, जिन्होंने इस अवसर पर अतिथि के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। 18 अक्टूबर 2024 को रिलीज होने वाली यह फिल्म शिक्षा, सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन के इर्द–गिर्द केंद्रित एक दिल को छू लेने वाली कहानी पेश करने का वादा करती है।

इस कार्यक्रम में मुख्य कलाकार काशिका कपूर, अनुज सैनी और अतुल श्रीवास्तव के साथ–साथ निर्देशक–निर्माता प्रदीप खैरवार और निर्माता शानू सिंह राजपूत भी मौजूद थे, जिन्होंने उत्साह और गर्व के साथ मीडिया को संबोधित किया। ट्रेलर में गीता की प्रेरक यात्रा की झलकियाँ दिखाई गईं, जो एक किशोरी लड़की है जो सामाजिक बाधाओं के बावजूद शिक्षा प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्पित है, और उसके और कुंदन के बीच का मार्मिक बंधन, एक सहायक पुरुष नायक जो उसके संघर्षों में उसके साथ खड़ा है। निर्देशक और निर्माता प्रदीप खैरवार ने फिल्म के संदेश और महत्व पर अपने विचार साझा करते हुए कहा कि आयुषमती गीता मैट्रिक पास सिर्फ एक कहानी नहीं है। यह सामाजिक चुनौतियों का सामना करने वाली महिलाओं की ताकत और लचीलेपन का प्रतिबिंब है। फिल्म जीवन और रिश्तों को बदलने में शिक्षा की शक्ति पर जोर देती है। गीता और कुंदन की यात्रा के माध्यम से, हमारा उद्देश्य दर्शकों को पारंपरिक मानदंडों को तोड़ने और शिक्षा को समानता और सशक्तिकरण के साधन के रूप में देखने के लिए प्रेरित करना है। गुड आइडिया फिल्म्स और स्पंक प्रोडक्शंस के बैनर तले बनी इस फिल्म का निर्देशन प्रदीप खैरवार ने किया है, जबकि सह–निर्माता जेके एंटरटेनमेंट और पेंटेक इंटरनेशनल हैं। नवनीतेश सिंह द्वारा लिखी गई यह कहानी ग्रामीण भारत में महिलाओं द्वारा सामना किए जाने वाले संघर्षों और उनके भविष्य को आकार देने में शिक्षा के महत्व पर गहराई से प्रकाश डालती है। यह फिल्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी और चंदौली की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जो ग्रामीण भारत के सार को खूबसूरती से दर्शाती है।

गीता के रूप में काशिका कपूर, कुंदन के रूप में अनुज सैनी और विद्याधर के रूप में अतुल श्रीवास्तव सहित फिल्म के शानदार कलाकार भावनात्मक रूप से भरपूर अभिनय करने का वादा करते हैं। संजीव आनंद झा द्वारा रचित एक शक्तिशाली संगीत स्कोर, कबीर केवल, संजीव आनंद झा और विजय नरेंद्र शिंदे द्वारा लिखे गए गीतों से आकर्षक कथानक को और भी बेहतर बनाया गया है।

आयुष्मति गीता मैट्रिक पास की कहानी गीता की शिक्षा के लिए लड़ाई, उसे सफल होते देखने के लिए उसके पिता के दृढ़ संकल्प और उसके सपनों को साकार करने में कुंदन के अटूट समर्थन के इर्द–गिर्द घूमती है। फिल्म में सामाजिक स्वीकृति, महिलाओं को शिक्षा से मिलने वाले सम्मान और सामाजिक अपेक्षाओं के खिलाफ लड़ाई जैसे विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

अपनी विचारोत्तेजक कहानी के साथ आयुषमति गीता मैट्रिक पास दर्शकों पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ने के लिए तैयार है, जो जीवन को आकार देने और अधिक समतापूर्ण समाज बनाने में शिक्षा के महत्व के बारे में बातचीत को प्रोत्साहित करती है। यह फिल्म 18 अक्टूबर 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। दर्शक इसके आने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं, दृढ़ संकल्प, प्रेम और सामाजिक बदलाव की इस प्रेरक कहानी को देखने के लिए तैयार हैं। अतिथि आनंद कुमार ने फिल्म के कथानक की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह देखकर खुशी होती है कि ऐसी फिल्म देखी जा रही है जो शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालती है, खासकर ग्रामीण भारत की युवा लड़कियों के लिए। मेरा मानना है कि आयुषमति गीता मैट्रिक पास दर्शकों को पसंद आएगी और कई लोगों को महिला शिक्षा के लिए समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित करेगी। ❐

एक देश एक चुनाव-मंत्रिमंडल की मिली स्वीकृति

✍ **जितेन्द्र कुमार सिन्हा**
पूर्व अध्यक्ष
बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन

एक देश एक चुनाव को लागू करने में संविधान के कुछ अनुच्छेदों में संशोधन किया जाना आवश्यक होगा। जन प्रतिनिधि अधिनियम 1951 की धारा 141, 147 से 151, 152, अनुच्छेद 85, अनुच्छेद 83 (2), अनुच्छेद 172(1), अनुच्छेद 324 ए, अनुच्छेद 325, अनुच्छेद 356, संशोधन करने की जरूरत होगी। एक देश एक चुनाव के लिए पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में 02 सितम्बर, 2023 को एक समिति गठित की गई थी, जिसमें केन्द्रीय गृह एव सहकारिता मंत्री अमित शाह, राज्यसभा में विपक्ष के पूर्व नेता गुलाम नबी आजाद, 15वें वित्त आयोग के पूर्व अध्यक्ष एन.के. सिंह, लोकसभा के पूर्व महासचिव डॉ. सुभाष कश्यप, वरिष्ठ अधिवक्ता हरीश साल्वे और पूर्व मुख्य सतर्कता आयुक्त संजय कोठारी सदस्य थे। केन्द्रीय कानून और न्याय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अर्जुन राम मेघवाल विशेष आमंत्रित सदस्य थे। डॉ. नितेन चंद्र हाई लेवल कमेटी के सचिव थे। समिति ने लगभग 191 दिनों में रिपोर्ट तैयार की है।

47 राजनीतिक दलों में से 32 ने एक साथ चुनाव कराने पर सहमति दी है, जबकि 15 दलों ने इसका विरोध किया है। विरोध करने वालों में कांग्रेस, आम आदमी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) प्रमुख दलों में शामिल हैं। वर्तमान केन्द्र सरकार ने 18 सितम्बर को आहूत मंत्रिमंडल की बैठक में उच्चस्तरीय समिति की रिपोर्ट पर अपनी स्वीकृति दे दी है। संभवतः केन्द्र सरकार आगामी शीतकालीन सत्र में इसे पेश कर सकती है ।

एक देश एक चुनाव जब कानून की शक्ल लेगा तो इससे सार्वजनिक धन की बचत होगी, प्रशासनिक व्यवस्था और सुरक्षा बलों पर पड़ने वाला बोझ कम होगा, सरकारी नीतियों का समय पर कार्यान्वयन सुनिश्चित हो सकेगा और प्रशासनिक मशीनरी चुनावी कार्यों में लगे रहने की बजाये देश के विकास कार्यों में लगी रहेगी।

यह सही है कि एक देश एक चुनाव लागू होने पर लोकतंत्र और संविधान को मजबूती मिलेगी। लेकिन इसके लिए संविधान की जन प्रतिनिधि अधिनियम 1951 की धारा 141 एव 152 जिसमें लोकसभा और राज्य विधान सभाओं के लिए आम चुनाव की अधिसूचना से संबंधित है, वहीं धारा 147 से 151 ए लोकसभा, विधान सभाओं के उप चुनाव से संबंधित है। अनुच्छेद 83 (2) और अनुच्छेद 172(1) लोक सभा और राज्य विधान सभाओं की अधिकतम अवधि निर्धारित करते हैं। अनुच्छेद 325 एकल मतदाता सूची और एकल मतदाता फोटो पहचान पत्र से संबंधित है इसमें भी संशोधन की आवश्यकता पड़ेगी। अनुच्छेद 324 ए नगरपालिका और पंचायतों के चुनावों के लिए तथा अनुच्छेद 356 केन्द्र को निर्वाचित राज्य सरकार को बर्खास्त करने से संबंधित संशोधन आदि अपेक्षित होगा।

जहां तक मैं समझता हूँ कि एक देश एक चुनाव के पीछे का विचार भारत में लोकसभा (संसद का निचला सदन) और राज्य विधान सभाओं के चुनावों को एक साथ समयबद्ध करने से है। क्योंकि भारत में प्रत्येक पाँच वर्ष पर लोकसभा और राज्य विधान सभाओं के लिए चुनाव होते हैं। चुनाव पर खर्च का बोझ बढ़ने के कारण कुछ राज्य अपनी राज्य विधान सभाओं के लिए अलग–अलग चुनाव कराते है। एक देश एक चुनाव की अवधारणा के तहत यदि सभी चुनाव एक साथ आयोजित होगा तो, चुनाव की संख्या और उस पर होनेवाले खर्च को कम करने तथा चुनावी प्रक्रिया सरल होने की उम्मीद है। मतदाता एक साथ कई चुनावों में भाग ले पायेंगे, जिससे मतदान में वृद्धि होगी, प्रशासन का चुनाव समय सारिणी में सामंजस्य स्थापित होगा, शासन की प्रभावशीलता में भी सुधार की उम्मीद है।

देश में आजादी के बाद 1951 से 1967 तक चुनाव एक साथ ही होते थे। लोकसभा और राज्यों की विधानसभा चुनाव एक साथ होना, संविधान सम्मत होने के साथ ही पूरे देश के लिए कल्याणकारी भी है, क्योंकि चुनाव के कारण बार–बार आचार संहिता लगती है जिसकी वजह से होने वाली देरी से मुक्ति मिलेगी और देश एव राज्यों विकास कार्यों की रफ्तार तेज होगी। एक देश एक चुनाव से सरकार की स्थिरता को लंबी अवधि मिलेगी, जिससे निर्वाचित प्रतिनिधि नीतियों को लागू करने पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकेंगे। सरकार को दीर्घकालिक योजना बनाने और सुसंगत नीति कार्यान्वयन करने में सुविधा होगी। एक साथ चुनाव होने से मतदाताओं को हर पांच वर्ष में केवल एक बार ही वोट डालना होगा, जिससे मतदाताओं की भागीदारी सुनिश्चित निर्णय के साथ बढ़ेगी।

उच्चस्तरीय समिति ने चुनाव दो चरण में कराने, पहले चरण में लोक सभा और विधानसभा तथा दूसरे चरण में, लोक सभा और विधानसभा चुनाव के सौ दिन के अंदर, नगरपालिका और पंचायत चुनाव कराने की सिफारिश की है। समिति ने यह भी कहा है कि एक देश एक चुनाव लागू होने पर किसी कारणवश लोक सभा दो वर्ष में ही भंग हो जाता है तो नई सरकार का कार्यकाल तीन वर्ष का ही होगा, उसी प्रकार विधान सभाओं के लिए नए चुनाव होते हैं तो विधान सभाओं का कार्यकाल लोक सभा के पूर्ण कार्यकाल तक रहेगा, यदि वह समय पूर्व भंग नहीं हुआ हो। समिति ने निर्वाचन आयोग की सलाह से एकल मतदाता सूची और एकल मतदाता फोटो पहचान पत्र की व्यवस्था एवं संविधान में आवश्यक संशोधन करने का सुझाव दिया है। ❒

नवरात्रि विशेष

मनोकामना पूर्ति करनेवाली खगौल की महाकाली, जिनपर बिहार व गैर राज्यों के श्रद्धालु चढ़ाते हैं सोने चांदी के अपार आभूषण

✍ **प्रीतम कुमार**
प्रबंध संपादक, बोलो जिंदगी

पटना के खगौल स्थित सैदपुरा काली स्थान, नवरात्रि पर्व में हलचल मंच श्री श्री महाकाली पूजा समिति के बैनर तले मां काली की प्रतिमा सन् 1985 में स्थापित हुई। मां काली की प्रतिमा स्थापित करने के पीछे की एक घटना है जो इस प्रकार है, कि सभी लोग मिलकर खगौल में ही किसी और संस्था में दुर्गा मां की प्रतिमा की पूजा करते थे। फिर अचानक एक वर्ष उस संस्था में एक बैनर लगाने के कारण विवाद हुआ और फिर कुछ सदस्य उस संस्था से अलग हो गए। और एक बार वही सदस्य दशहरा घूमने पटना निकल गए तो एक जगह मां काली की प्रतिमा देखी, जो कि दुर्गा पूजा में बहुत कम ही देखने को मिलती है। फिर उन सभी सदस्यों ने यह तय कर लिया कि अब हम सभी दशहरा में मां काली की प्रतिमा स्थापित करेंगे। लेकिन तब पैसे भी उतने नहीं थे कि इतना बड़ा आयोजन कर सकें, चूंकि तब वे दसवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। फिर भी सबलोग मिलकर मात्र 6 हजार रुपए इकट्ठा किए और मां काली की स्थापना हुई और तब से आज 2024 तक 7 से 8 लाख रुपए के बजट और लाखों के सोने व चांदी के जेवरात तक इस संस्था को लेकर आ गए।

संस्था के इतना आगे बढ़ने के पीछे मां काली के प्रति लोगों में गहरी आस्था है। चूंकि यहां की मां काली की पूजा अर्चना भी पूरे बंगाली विधि विधान से की जाती है और यहां के पुरोहित भी पश्चिम बंगाल के कोलकाता से आते हैं। इस कारण यहां की पूजा में और खासकर मां की आरती में लोगों की भीड़ भी नियंत्रित करना बहुत मुश्किल होता है। लोगों का यह मानना है कि यहां की मां काली से मांगी हुई मन्नत पूरी होती है। और इस बात का अनुमान आप इससे ही लगा सकते हैं कि जब जब किसी की मन्नत पूरी होती है तो लोग मां को सोने और चांदी के आभूषण चढ़ाते हैं। आभूषणों की बात करें तो मां काली का मुकुट जो कि 2.5 की. ग्रा का है और पायल 4 की. ग्रा, 10 हाथों में बाजू बंद 2. की. ग्रा., 10 हाथों में कंगन 2.5 की. ग्रा, छत्री 2 की. ग्रा, माथे पर सोने का चांद 100 ग्राम।

मतलब मां के सभी जेवर लगभग 25 किलो चांदी व 250 ग्राम सोने का है। अब तक संस्था में 50 किलो से ज्यादा चांदी व 300 ग्राम सोने के आभूषण हैं।

इस बार एक भक्त जिन्होंने मां को 35 हजार रुपए का दान दिया और उन्होंने बताया कि मैने 17 साल पहले एक मन्नत मांगी थी और वो बहुत पहले ही पूरी हो गई मगर समय न मिलने के कारण मैं अब चढ़ावा लेकर आरा जिला से आया हूं।

हालांकि हमारी संस्था ने अब इन पैसों का इस्तेमाल सामाजिक कार्यों में लगाने का निर्णय लिया है। जैसे कोई हॉस्पिटल खोले, गरीब बच्चों की पढ़ाई में मदद करे या अन्य किसी भी क्षेत्र में समाज के लिए कोई कार्य हो। और इसके लिए यह संस्था एक जमीन की तलाश कर रही है। कोई दान में दे या ये संस्था पैसे देकर खरीदे। ताकि मां काली की प्रतिमा हमेशा के लिए यहां स्थापित हो और उनके लिए एक मंदिर का निर्माण हो सके।

इस बार मां काली की भव्य प्रतिमा के लिए कोलकाता स्थित दक्षिणेश्वर मंदिर के जैसा पंडाल बनवाया गया है जिसे लोग खूब पसंद कर रहे हैं।

पूजा समिति: हलचल मंच श्री श्री महाकाली पूजा समिति, खगौल

सदस्यगण : –

अनिल कुमार विभूति (अध्यक्ष),
राजेश कुमार गुप्ता (सचिव),
संजय कुमार गुप्ता (व्यवस्थापक),
रमाकांत सेनु (कोषाध्यक्ष),
हरेश नारायण साहू (सह कोषाध्यक्ष),
डा० संभू शरण सिंह (संरक्षक)

श्री महेश्वर हजारी जी
माननीय मंत्री सूचना एवं जनसंपर्क विभाग,
बिहार सरकार
को
'बोलो जिंदगी'
पत्रिका भेंट करते हुए पत्रिका के
संपादक राकेश कुमार सिंह (बाएं) एवं
प्रबंध संपादक प्रीतम कुमार (दाएं)